वर्ष-9 अंक: 9 अगस्त -2024

स्वर्ण दीपिका

ई-पत्रिका

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (कार्यालय),चेन्नै

स्वर्ण दीपिका

ई-पत्रिका

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (कार्यालय),चेन्नै

वर्ष- 9 अंक: 9 अगस्त -2024

संरक्षक

आर.एन.सिंह
अध्यक्ष, नराकास एवं
महाप्रबंधक, दक्षिण रेलवे

सह संरक्षक

कौशल किशोर
अपर महाप्रबंधक, दक्षिण रेलवे

मुख्य संपादक

पी.सुरेश
तत्कालीन मुख्य राजभाषा अधिकारी एवं
प्रधान मुख्य यांत्रिक इंजीनियर
दक्षिण रेलवे

शैलेश कुमार तिवारी
मुख्य राजभाषा अधिकारी एवं
प्रधान मुख्य सिगनल व दूरसंचार इंजीनियर
दक्षिण रेलवे

संपादक

सहदेव सिंह पुरती
सदस्य सचिव एवं
उप महाप्रबंधक, राजभाषा, दक्षिण रेलवे

संपादक मंडल

बिनीता सोय
वरिष्ठ राजभाषा अधिकारी, प्रधान कार्यालय, दक्षिण रेलवे
एवं
राजभाषा संगठन, प्रधान कार्यालय, दक्षिण रेलवे

संपर्क:
महाप्रबंधक कार्यालय, दक्षिण रेलवे
पॉचवी मंजिल, मूर मार्केट काम्पलेक्स
पार्क टाउन, चेन्नै – 600 003.

सत्यमेव जयते

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (कार्यालय), चेन्नै
महाप्रबंधक कार्यालय, दक्षिण रेलवे, चेन्नै– 600 003.
Town Official Language Implementation Committee (O), Chennai
Office of the General Manager,
Southern Railway, Chennai – 600 003

आर.एन.सिंह

अध्यक्ष, नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (कार्यालय) एवं
महाप्रबंधक, दक्षिण रेलवे

संदेश

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, चेन्नै की अपनी हिन्दी पत्रिका **“स्वर्ण दीपिका”** का नवीनतम अंक प्रकाशित किया जा रहा है। सदस्य कार्यालयों के सभी लेखक, विचारक, और चिंतक इस पत्रिका की उपयोगिता और उपादेयता को बनाये रखने के लिए सदा प्रयासरत हैं। आगे भी इसका प्रवाह इसी तरह निरंतर जारी रहे, इसकी शुभकामनाएं करता हूँ।

इस पत्रिका के लेखन, प्रकाशन और वितरण से संबंधित उप समितियों, अधिकारियों और कर्मचारियों को हार्दिक बधाईयाँ।

(आर.एन.सिंह)

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (कार्यालय), चेन्नै
महाप्रबंधक कार्यालय, दक्षिण रेलवे, चेन्नै– 600 003.
Town Official Language Implementation Committee (O), Chennai
Office of the General Manager,
Southern Railway, Chennai – 600 003

कौशल किशोर
अपर महाप्रबंधक, दक्षिण रेलवे

संदेश

पत्र-पत्रिकाएं और पुस्तकें समाज के किसी भी संवेदनशील व्यक्ति के लिए बड़ी अहम निधि होती हैं। ये तत्कालीन समाज के दर्पण तो होते ही हैं, संवाद- परिसंवाद के सशक्त माध्यम भी होते हैं। समाज के चिंतनशील मनो-मस्तिष्क की तरंगें इनमें परिलक्षित होती हैं। इससे समाज को बहुविध विचार, मनोवृत्ति और मार्गदर्शन मिलता रहता है। इससे उन्हें आगे बढ़ने के लिए एक निश्चित मार्ग प्राप्त करने और सही लक्ष्य तय करने में सहायता मिलती है। मैं इस पत्रिका की परम सफ़लता और निरंतरता की आशा करता हूँ। इस पत्रिका के पाठकों और प्रकाशन से जुड़े सभी कर्मठ और सहृदय अधिकारियों और कर्मचारियों को शुभकामनाएं देता हूँ।

(कौशल किशोर)

सत्यमेव जयते

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (कार्यालय), चेन्नै
महाप्रबंधक कार्यालय, दक्षिण रेलवे, चेन्नै– 600 003.
Town Official Language Implementation Committee (O), Chennai
Office of the General Manager,
Southern Railway, Chennai – 600 003

पी.सुरेश
तत्कालीन प्रधान मुख्य यांत्रिक इंजीनियर एवं
मुख्य राजभाषा अधिकारी

संदेश

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, चेन्नै की ओर से प्रकाशित की जाने वाली अर्धवार्षिक हिन्दी पत्रिका "स्वर्ण दीपिका" का नवीनतम अंक प्रकाशित किया जा रहा है, यह बड़ी खुशी की बात है । दक्षिण भारतीय गैर हिन्दी प्रदेशों में से इस तरह की पत्र-पत्रिकाएं पाठकों और लेखकों को आपसी संवाद के साथ-साथ हिन्दी भाषा से जुड़े रहने का एक सशक्त माध्यम प्रस्तुत करती हैं । इससे ज्यादा से ज्यादा लोग इस भाषा और इसके विचारों के संपर्क में आते हैं तथा स्वयं भी अनुकूल वातावरण पाकर अपना चिंतन और लेखन कार्य इस भाषा में करने की योग्यता प्राप्त करते हैं। इस प्रकार से कोई भी एक भाषा क्षेत्रीयता से राष्ट्रीयता और आगे अन्तर्राष्ट्रीय विस्तार प्राप्त करती है । यह अपनी विविधता, रोचकता और गुणवत्ता को स्वयं में समेटे निरंतर आगे भी इसी तरह प्रवाहित होती रहे, इस बात की मंगलकामनाएं करता हूँ तथा इसके पाठकवृंद, लेखकगण और प्रकाशन - वितरण में संलग्न सभी मनीषियों को साधुवाद देता हूँ ।

पी. सुरेश

(पी.सुरेश)

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (कार्यालय), चेन्नै
महाप्रबंधक कार्यालय, दक्षिण रेलवे, चेन्नै– 600 003.
Town Official Language Implementation Committee (O), Chennai
Office of the General Manager,
Southern Railway, Chennai – 600 003

शैलेश कुमार तिवारी

प्रधान मुख्य सिगनल व दूरसंचार इंजीनियर एवं
मुख्य राजभाषा अधिकारी

संदेश

राजभाषा हमारे सरकारी कामकाज का केवल एक सशक्त माध्यम ही नहीं है बल्कि यह राष्ट्र की आत्मा है। किसी भी राष्ट्र की उन्नति में उसकी राजभाषा का एक महत्वपूर्ण योगदान होता है। हिंदी के मूर्धन्य विद्वान श्री भारतेंदु हरिश्चंद्र जी ने ठीक ही कहा है कि

" निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल।
बिन निज भाषा-ज्ञान के, मिटत न हिय को सूल।।"

आज मुझे बताते हुए अपार हर्ष की अनुभूति हो रही है कि चेन्नै स्थित नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की ओर से प्रतिवर्ष प्रकाशित 2 पत्रिकाओं, “स्वर्ण दीपिका” एवं “पल्लविका” का राजभाषा के प्रचार-प्रसार में काफी महत्पूर्ण योगदान रहा है। इनमें से यह “स्वर्ण दीपिका” एक ई-पत्रिका है जिसने वर्तमान समय में इन्टरनेट क्रांति का भरपूर लाभ उठाकर राजभाषा को हर स्तर पर उपलब्ध कराया है और इसके प्रचार-प्रसार में अग्रणी भूमिका निभाई है।

मुझे पूरा विश्वास है कि केंद्र सरकार के अधिकारियों, कर्मचारियों एवं समाज के बीच इसका उत्साह से स्वागत होगा और पाठकों को भी आगे इसमें लिखने के लिए प्रोत्साहित करेगा।

सबको हमारी शुभकामनाएं।।

शैलेश

(शैलेश कुमार तिवारी)

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (कार्यालय), चेन्नै
महाप्रबंधक कार्यालय, दक्षिण रेलवे, चेन्नै– 600 003.
Town Official Language Implementation Committee (O), Chennai
Office of the General Manager,
Southern Railway, Chennai – 600 003

सहदेव सिंह पुरती
सदस्य-सचिव, नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (का) ,एवं
उप महाप्रबंधक,राजभाषा, दक्षिण रेलवे

संपादकीय

प्रकृति में लताओं को सहारे की ज़रूरत पड़ती है। सहारा मिल जाये तो ऊँचा उठती हैं, वरना जमीन पर फैल जाती हैं। भाषाओं की भी यही स्थिति है, जिस भाषा में कोई समुदाय अपने विचारों का आदान-प्रदान करता है, वह उसकी मातृ भाषा होती है। अपने दैनिक व्यवहार में बारंबारिता के कारण उसे वह आसानी से सीख लेता है, परन्तु जिन भाषाओं से संपर्क और व्यवहार रोजाना नहीं होता, उनकी शब्दावली और संचार के लिए थोडे परिचय की ज़रूरत पड़ती है। परिचित भाषा कब अपनी हो जाती है, इसकी समय सीमा नहीं होती। इस परिचय के लिए बार-बार उस भाषा के संपर्क में आना पड़ता है। इस संपर्क के लिए यदि कोई व्यक्ति पास न हो तो पुस्तकें और पत्र-पत्रिकाएं इस कमी को पूरा करती हैं। इससे भाषा के साथ घनिष्ठता बढ़ती है और वह अनुकूल परिस्थितियों में अपनी हो जाती है।

इस प्रक्रिया में चेन्नै जैसे तमिल भाषा-भाषी क्षेत्र में हिन्दी भाषा की पत्र-पत्रिकाओं का प्रकाशन होते रहना अन्य भाषा-भाषियों के लिए हिन्दी भाषा को ठीक तरह से सीखने और इसके संपर्क में बने रहने का सफलतम साधन है। यह खुशी की बात है की नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति सचिवालय की ओर से लगातार इस पत्रिका को प्रकाशित किया जा रहा है। हमें विश्वास है कि इसके प्रकाशन और वितरण से न केवल इसके पाठक, बल्कि लेखक भी लाभान्वित होंगे। लेखकों से अनुरोध है कि इस पत्रिका को सदैव जीवंत रखने में अपना योगदान बनाये रखें। सादर धन्यवाद !!

(सहदेव सिंह पुरती)

स्वर्ण दीपिका

ई-पत्रिका

क्र.सं	विषय-सूची	नाम सर्वश्री	पृष्ठ सं.
1.	ठाकुर का कुँआ - प्रेमचंद	संकलित	1
2.	चेतना और साँझ (कविता)	सहदेव सिंह पुरती	4
3.	भूतवाला सेमल		5
4.	महावीर प्रसाद द्विवेदी और हिंदी नवजागरण	डॉ. महेश्वरी रंगनाथन	8
5.	श्री भगवद् गीता के विभिन्न सोपान और आधुनिक समाज	डॉ.पी.आर.वासुदेवन 'शेष'	11
6.	सिनेमा में कैमरे की भूमिका	डॉ. सुकांत सुमन	14
7.	नागार्जुन और बिष्णु प्रसाद राभा की कविताओं का तुलनात्मक अध्ययन	जितेन्द्र कुमार गुप्ता	18
8.	आज़ादी का अमृत महोत्सव (कविता)	नवीन कुमार 'पटनी'	20
9.	लोग कहते हैं (कविता)	अरुण विकास	21
10.	जब तुमने कहा था वो बेटी है , वो क्या करेगी !!! (कविता)	गौरव वत्स	22
11.	क्या आप संतुलित भोजन लेते हैं?	लता वेंकटेश	23
12.	खेल-खेल में सीख	डॉ.ए.श्रीनिवासन	26
13.	भारत में 2024 का चुनाव: राजनीतिक दायरे	जितेन्द्र कु. जायसवाल	29
14.	मेरे शब्दों में हिंदी (कविता)	तेनमोळी	31
15	'अनुवादिनी' – बहुआयामी मशीनी अनुवाद का एक नवीन और सशक्त मंच	अश्विन आर एस	32
16	बदलते रिश्ते	एन.चित्रा	35
17	क्रांति	एस.बालसुब्रमणियन	38
18	तमिलनाडु राज्य के पुराने वाद्य यंत्र	वैदेही नरेश कुमार	40

22.12.2023 - नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की 64 वीं बैठक

11.03.2024 -15.03.2024
पांच दिवसीय संक्षिप्त अनुवाद प्रशिक्षण कार्यक्रम

07.05.2024 – वार्तालाप प्रतियोगिता

29.05.2024 – सामान्य स्वास्थ्य विषय पर तकनीकी सेमिनार

26.06.2024 – हिंदी अंत्याक्षरी प्रतियोगिता

ठाकुर का कुँआ

प्रेमचंद

जोखू ने लोटा मुँह से लगाया तो पानी में सख्त बदबू आई। गंगी से बोला- यह कैसा पानी है? मारे बास के पिया नहीं जाता। गला सूखा जा रहा है और तू सड़ा पानी पिलाए देती है !

गंगी प्रतिदिन शाम पानी भर लिया करती थी। कुआँ दूर था, बार-बार जाना मुश्किल था। कल वह पानी लाई, तो उसमें बू बिलकुल न थी, आज पानी में बदबू कैसी ! लोटा नाक से लगाया, तो सचमुच बदबू थी। ज़रुर कोई जानवर कुएँ में गिरकर मर गया होगा, मगर दूसरा पानी आवे कहाँ से? ठाकुर के कुएँ पर कौन चढ़ने देगा? दूर से लोग डाँट बताएँगे। साहू का कुआँ गाँव के उस सिरे पर है, परंतु वहाँ भी कौन पानी भरने देगा? कोई तीसरा कुआँ गाँव में है नहीं।

जोखू कई दिन से बीमार है। कुछ देर तक तो प्यास रोके चुप पड़ा रहा, फिर बोला-अब तो मारे प्यास के रहा नहीं जाता। ला, थोड़ा पानी नाक बंद करके पी लूँ।

गंगी ने पानी न दिया। ख़राब पानी से बीमारी बढ़ जाएगी इतना जानती थी, परंतु यह न जानती थी कि पानी को उबाल देने से उसकी ख़राबी जाती रहती हैं। बोली- यह पानी कैसे पिओगे? न जाने कौन जानवर मरा है। कुएँ से मैं दूसरा पानी लाए देती हूँ।

जोखू ने आश्चर्य से उसकी ओर देखा-पानी कहाँ से लाएँगे?
ठाकुर और साहू के दो कुएँ तो हैं। क्या एक लोटा पानी न भरने देंगे?

'हाथ-पाँव तुड़वा आएगी और कुछ न होगा। बैठ चुपके से। ब्रह्म-देवता आशीर्वाद देंगे, ठाकुर लाठी मारेगें, साहूजी एक के पाँच लेंगे। ग़रीबों का दर्द कौन समझता है! हम तो मर भी जाते है, तो कोई दुआर पर झाँकने नहीं आता, कंधा देना तो बड़ी बात है। ऐसे लोग कुएँ से पानी भरने देंगे?'

इन शब्दों में कड़वा सत्य था। गंगी क्या जवाब देती, किंतु उसने वह बदबूदार पानी पीने को न दिया।

रात के नौ बजे थे। थके-माँदे मजदूर तो सो चुके थे, ठाकुर के दरवाजे पर दस-पाँच बेफ़िक्रे जमा थे। मैदानी बहादुरी का तो अब न जमाना रहा है, न मौका। कानूनी बहादुरी की बातें हो रही थीं। कितनी होशियारी से ठाकुर ने थानेदार को एक ख़ास मुकदमे में रिश्वत दी और साफ़ निकल गये। कितनी अक्लमंदी से एक मार्के के मुकदमे की नक़ल ले आए। नाजिर और मोहतमिम, सभी कहते थे, नक़ल नहीं मिल सकती। कोई पचास माँगता, कोई सौ। यहाँ बेपैसे-कौड़ी नकल उड़ा दी। काम करने ढंग चाहिए।

इसी समय गंगी कुएँ से पानी लेने पहुँची।

कुप्पी की धुँधली रोशनी कुएँ पर आ रही थी। गंगी जगत की आड़ में बैठी मौके का इंतज़ार करने लगी। इस कुएँ का पानी सारा गाँव पीता है। किसी के लिए रोका नहीं, सिर्फ़ ये बदनसीब नहीं भर सकते।

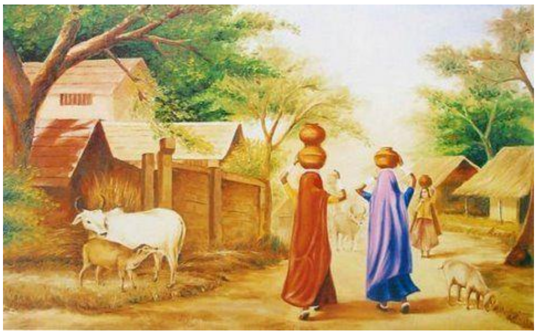

गंगी का विद्रोही दिल रिवाजी पाबंदियों और मज़बूरियों पर चोटें करने लगा—हम क्यों नीच हैं और ये लोग क्यों ऊँच हैं? इसलिए कि ये लोग गले में तागा डाल लेते हैं? यहाँ तो जितने है, एक-से-एक छँटे हैं। चोरी ये करें, जाल-फ़रेब ये करें, झूठे मुकदमे ये करें। अभी इस ठाकुर ने तो उस दिन बेचारे गड़रिए की भेड़ चुरा ली थी और बाद में मारकर खा गया। इन्हीं पंडित के घर में तो बारहों मास जुआ होता है। यही साहू जी तो घी में तेल मिलाकर बेचते हैं। काम करा लेते हैं, मजूरी देते नानी मरती है। किस-किस बात में हमसे ऊँचे हैं, हम गली-गली चिल्लाते नहीं कि हम ऊँचे हैं, हम ऊँचे हैं। कभी गाँव में आ जाती हूँ, तो रस-भरी आँख से देखने लगते हैं। जैसे सबकी छाती पर साँप लोटने लगता है, परंतु घमंड यह कि हम ऊँचे हैं!

कुएँ पर किसी के आने की आहट हुई। गंगी की छाती धक-धक करने लगी। कहीं देख लें तो गजब हो जाए। एक लात भी तो नीचे न पड़े। उसने घड़ा और रस्सी उठा ली और झुककर चलती हुई एक वृक्ष के अंधेरे साये मे जा खड़ी हुई। कब इन लोगों को दया आती है किसी पर ! बेचारे महँगू को इतना मारा कि महीनों लहू थूकता रहा। इसीलिए तो कि उसने बेगार न दी थी। इस पर ये लोग ऊँचे बनते हैं?

कुएँ पर स्त्रियाँ पानी भरने आई थी। इनमें बात हो रही थी।

'खाना खाने चले और हुक्म हुआ कि ताजा पानी भर लाओ। घड़े के लिए पैसे नहीं हैं।'

'हम लोगों को आराम से बैठे देखकर जैसे मरदों को जलन होती है।'

'हाँ, यह तो न हुआ कि कलसिया उठाकर भर लाते। बस, हुकुम चला दिया कि ताजा पानी लाओ, जैसे हम लौंडियाँ ही तो हैं।'

'लौंडियाँ नहीं तो और क्या हो तुम? रोटी-कपड़ा नहीं पातीं? दस-पाँच रुपए भी छीन-झपटकर ले ही लेती हो। और लौडियाँ कैसी होती हैं!'

'मत लजाओ, दीदी! छिन-भर आराम करने को जी तरसकर रह जाता है। इतना काम किसी दूसरे के घर कर देती, तो इससे कहीं आराम से रहती। ऊपर से वह एहसान मानता! यहाँ काम करते-करते मर जाओ; पर किसी का मुँह ही सीधा नहीं होता।'

दोनों पानी भरकर चली गई, तो गंगी वृक्ष की छाया से निकली और कुएँ की जगत के पास आई। बेफ़िक्रे चले गऐ थे। ठाकुर भी दरवाज़ा बंद कर अंदर आँगन में सोने जा रहे थे। गंगी ने क्षणिक सुख की

साँस ली। किसी तरह मैदान तो साफ़ हुआ। अमृत चुरा लाने के लिए जो राजकुमार किसी जमाने में गया था, वह भी शायद इतनी सावधानी के साथ और समझ-बूझकर न गया हो। गंगी दबे पाँव कुएँ की जगत पर चढ़ी, विजय का ऐसा अनुभव उसे पहले कभी न हुआ था।

उसने रस्सी का फंदा घड़े में डाला। दायें-बायें चौकन्नी दृष्टि से देखा जैसे कोई सिपाही रात को शत्रु के किले में सुराख़ कर रहा हो। अगर इस समय वह पकड़ ली गई, तो फिर उसके लिए माफ़ी या रियायत की रत्ती-भर उम्मीद नहीं। अंत मे देवताओं को याद करके उसने कलेजा मजबूत किया और घड़ा कुएँ में डाल दिया।

घड़े ने पानी में गोता लगाया, बहुत ही आहिस्ता। ज़रा भी आवाज़ न हुई। गंगी ने दो-चार हाथ जल्दी-जल्दी मारे। घड़ा कुएँ के मुँह तक आ पहुँचा। कोई बड़ा शहज़ोर पहलवान भी इतनी तेज़ी से न खींच सकता था।

गंगी झुकी कि घड़े को पकड़कर जगत पर रखे कि एकाएक ठाकुर साहब का दरवाज़ा खुल गया। शेर का मुँह इससे अधिक भयानक न होगा।

गंगी के हाथ से रस्सी छूट गई। रस्सी के साथ घड़ा धड़ाम से पानी में गिरा और कई क्षण तक पानी में हिलकोरे की आवाजें सुनाई देती रहीं।

ठाकुर कौन है, कौन है? पुकारते हुए कुएँ की तरफ़ आ रहे थे और गंगी जगत से कूदकर भागी जा रही थी।

घर पहुँचकर देखा कि जोखू लोटा मुँह से लगाए वही मैला-गंदा पानी पी रहा है।

****

चेतना और साँझ

सहदेव सिंह पुरती
सदस्य-सचिव,नराकास,चेन्नै एवं
उप महाप्रबंधक,राजभाषा, दक्षिण रेलवे

यह सुनहरी सी साँझ भी
अंधेरा लेकर आई
भाग कर जाता कहाँ
यह हौले से जो आई।
बचता तो भी किधर
हर ओर जो छा गई
आगोश में अपने
सबको समा गई।

कहीं दीप, बिजलियां
कहीं कुछ और जलीं
पर अंधेरा यहाँ वहाँ
विराजता ही रहा।

सभी दिशाओं पर पड़ा
उसके उतरने का असर
सारे प्रयासों के बाद भी यह
छोड़ता नहीं कोई कसर ।

उजाले के बाद आता है
यह उठाए अपना सर
फिर चाहो न चाहो
जाता है रोज पसर ।

अधूरा है दिन भी
यहाँ रात के बिना
अधूरा है अंधेरा भी
उजाले के बिना ।

न सुबह आता है
सुनहरी भोर के बिना
न रात आती है
सुनहरी साँझ के बिना।

दिन को बन छांव
अंधेरा विरजता है
रात को उजाला
महीन आलोक बन जाता है।

पर इन दोनों का जहाँ
असर नहीं पड़ता है
जीवन में वह तथ्व
चेतना कहलाता है।।

***

भूतवाला सेमल

सहदेव सिंह पुरती
सदस्य-सचिव,नराकास,चेन्नै एवं
उप महाप्रबंधक,राजभाषा, दक्षिण रेलवे

कॉलेज में पढ़ने के लिए शहर चला गया, तो गाँव छूट गया । परंतु हर रविवार गाँव आना जारी रहा । तब तक खेती-बारी को तो छोटे भाई ने संभाल लिया था । कभी - कभार चावल - दाल घर से ले जाना होता था । इसी बीच हमने देखा गाँव में बड़ा बदलाव आया । गाँव में पत्थर तोड़ने का काम आरंभ हुआ । गाँव के लोग खाली समय में बीड़ी बनाया करते थे । पत्थर तोड़ने में शायद उन्हें ज्यादा पैसा मिलने लगा । गाँव में जहाँ कहीं भी पत्थर थे, गाँव वालों ने उन्हें तोड़कर गिट्टी बना लिया । जिस गाँव में हमने पहले साइकिल के सिवा और कोई वाहन नहीं देखे थे, वहीं अब गिट्टियों को उठाने के लिए ट्रक और लारियां दौड़ने लगीं । कम ही समय में गाँव के सारे पत्थर बिक गए । मानसून पर आधारित खेती का काम तो जनवरी-फरवरी तक निपट जाता है । गाँव के सारे पत्थर समाप्त होने पर अब सारे मजदूर सामने की पहाड़ी पर डट गए । पहाड़ी पर पत्थर की कमी नहीं थी । ऊपर के पत्थर समाप्त हुए तो पहाड़ी खोद - खोद कर चट्टान निकालने लगे । इस काम में करीब - करीब पूरा गाँव लग गया । मई-जून के महीने में गाँव का पूरा नजारा ही बदल गया था । पतझड़ में ऐसे ही गाँव और जंगल वीरान हो जाते थे । गाँव के अधिकांश लोग गिट्टी तोड़ने पहाड़ी पर चले गए तो गाँव भी वीरान हो गया । हर तरफ का मंजर सूखा दिखाई देता था । ऐसी गर्मी में गाँव पहुंचा तो पहाड़ी पर पत्थर तोड़ने की आवाज गाँव तक आ रही थी । जिज्ञासावश एक दिन हम भी पहाड़ी हो आए । गाँव के लोगों से वहीं मुलाकात हुई । सभी अलग-अलग समूह बनाकर काम कर रहे थे । एक जगह बैठा, तो सब पता चल गया, कि पहाड़ी की किस दिशा में कौन सा समूह काम कर रहा है । चिलचिलाती धूप से बचने के लिए लोगों ने पेड़ पत्तों से झमडा अर्थात् छांवन बना रखा था । वहीं उनकी खाने - पीने की सामग्रियां डेगची और मटको में रखी हुई थीं । पुरुष मिट्टी खोद - खोद कर चट्टान या पत्थर निकाल लाते थे । औरतें इन पत्थरों को छांव में बैठ कर तोड़ती रहती थीं । हथौड़े की चोट से पत्थरों के टूटने पर बच्चों को चोट लग जाने का डर बना रहता था । इसलिए घर पर ही बच्चे छोड़ दिए जाते थे । सबको सप्ताह में रविवार के दिन पैसे मिल जाते थे । ऐसा महसूस हुआ कि यह काम पाकर गाँव के लोग खुश थे । उनको कुछ आय मिलने लगी थी ।

पूरी पहाड़ी में सड़कें बनाई गई थीं । उन सड़कों के दोनों ओर गिट्टियों के ढेर लगाए गए थे । इन सबको लकड़ी का एक खुला हुआ बॉक्स दिया गया था । वे इस बॉक्स को किसी समतल जगह पर रखते थे और उसमें गिट्टी डालते थे । बॉक्स भर जाये तो लकड़ी का ढांचा खींच कर निकाल लेते थे । उसे दूसरी जगह रख कर उसमें गिट्टी भरते जाते थे । इस बॉक्सभर गिट्टियों के अनुसार इन्हें पैसे मिलते थे । इन गिट्टियों को लारी में भरने के लिए अलग से मजदूर थे । वे लारी से ही आते और गिट्टी लारी में भरकर लारी के साथ ही चले जाते थे । कुल मिलाकर पहाड़ी को हमने गुलजार पाया । वक्त के साथ मौसम बदला । बरसात की ऋतु आई । पहाड़ी का काम बहुत कम हो गया । लोग अपने-अपने खेतों में काम करने लगे । खेत - खलिहानों, पहाड़ियों, जंगलों और पहाड़ों तक सब ओर हरियाली छा गई । गाँव आते तो हरियाली देख मन मुग्ध हो जाता । कभी खेतों की तरफ जाता । धान की फसल लहलहा रही होती । बहुत तरह की सब्जियां और फल मिलते। जब तक गाँव में रहता बहुत खुश रहता । परंतु इस साल का सावन हमारे लिए हमेशा की तरह खुशगवार नहीं था । गाँव में बच्चों के बीच एक अजीब तरह की बीमारी फैल गई ।

लोग पूजा - पाठ करने लगे। गाँव का ओझा प्रतिदिन किसी न किसी के घर में बीमार बच्चों के ठीक होने के लिए मुर्गे, भेड़ और बकरियों की बलि देता था। हम गाँव में होते तो बीमार लोगों को डॉक्टरों के पास शहर ले जाने की सलाह देते रहते। इन गांवों में किसी भी बीमारी के लिए डॉक्टरों के पास जाने का रिवाज सदियों से नहीं है। गाँव में ही कुछ लोग होते हैं, जो हाथ की नाड़ी या मल - मूत्र की जांच कर बीमारियों की पहचान करते और जड़ी बूटियों की दवा करते थे। इससे अगर ठीक नहीं होता तो वे देवां या ओझा के पास जाते। देवां के पास जाने के लिए थोड़ा सा धान लेकर कूट लेते और उससे निकला अरवा चावल लेकर जाते। ओझा इस चावल को हाथ में ले मंत्र पड़ता और यह पता करता है कि कौन से भूत - प्रेत के असर के कारण उस व्यक्ति पर किसी दवा - दारू या मंत्र - यंत्र का असर नहीं हो रहा है। साथ ही वह यह भी पता करता है कि किस तरह की पूजा करने पर वह मान जाएगा। अर्थात आदमी को सताना छोड़ देगा और बीमार आदमी ठीक हो जाएगा। इस तरह से माँग के अनुसार चेगने, मुर्गा, मुर्गी या भेड़ -बकरी आदि की बली चढ़ाते। कुछ दिनों में बीमार ठीक हो जाते हैं। ऐसा भी नहीं कि पूजा करने मात्र से ही वे ठीक हो जाते हैं, साथ में उन्हें दवाइयां भी दी जाती हैं।

इस साल बरसात के महीने में बहुत से लोग बीमार हुए। विशेषकर बच्चे। उनको ठीक करने के सभी उपाय किए गए, पर बच्चे ठीक नहीं हुए। बात यहाँ तक आ गई कि होते हवाते गाँव के तेरह बच्चे गुजर गए। एक परिवार में हमारा आना जाना था, वहाँ तीन बच्चे थे। वे तीनों के तीनों नहीं रहे। गाँव में किसी बीमार को बचाने की जैसी तरकीबें की जाती थीं वे सभी तरकीबें असफल हो गईं। एक तरह से गाँव उजाड़ हो गया।

ऐसे ही गमगीन माहौल में हम एक दिन गाँव आए तो पाया कि गाँव का सबसे बड़ा सेमल का पेड़ काटकर गिरा दिया गया है। इस पेड़ को हम बचपन से जानते हैं। सड़क से थोड़ी दूर एक बहुत ही निरापद सी जगह पर अपनी शाखाएं फैला चुपचाप ऊंचा खड़ा है। इस की छांव में कभी गाँव के बच्चे खेलते, कभी खेतों में काम करने वाले किसान बैठकर भोजन ग्रहण करते। पर्व त्योहारों के समय इस की छांव तले ग्रामीणों का नाच गाना भी होता। इस पेड़ का गाँव में अपना एक अलग ही महत्व और नाम था। इसे कटा हुआ पाकर बड़ा अचंभा हुआ। पूछताछ करने पर पता चला कि उसे नइकी और कोटो ने मिलकर काटा। इससे किसी को किसी भी प्रकार की कोई असुविधा नहीं थी। बल्कि इससे गाँव वालों को अनेक सुविधाएं ही थीं। फिर भी इसे क्यों काटा, के जवाब में जो कहानी उभरकर आई वह इस प्रकार थी --

इस पेड़ में एक भूत रहता था। कभी-कभी वह गाँव वालों को परेशान करता था। परंतु, पूजा- बलि वगैरह देने पर वह मान जाता था। इस साल न जाने उसे क्या हुआ, उसे मनाने के तमाम प्रयास किए गए थे। बहुत तरह की पूजा - पाठ, बलियां दी गईं, पर वह माना नहीं। दो महीनों के अंदर उसने गाँव के तेरह बच्चों को खा लिया। नइकी और कोटो के घरों में भी तीन - तीन

बच्चे थे। सब साफ हो गये। इसलिए उन दोनों ने गुस्से में आकर यह पेड़ काट डाला। हिम्मत नहीं थी, इसे काटने की किसी को। इनके तो बच्चे नहीं, फिर किस बात का डर, इसलिए उन दोनों ने इस पेड़ को गिरा दिया। यह कहा जाए तो बेहतर होगा कि उस बच्चे खाऊ भूत का घर इन दोनों ने उजाड़ दिया ताकि वह यहाँ से भागकर कहीं और चला जाए। भविष्य में इस गाँव वालों को आगे परेशान न करे।

हमें गर्मी के मौसम का नजारा याद आया। पहाड़ी पर गिट्टी पीटने की आती अजीब संगीत का आभास देती ठक- ठक- ठूक की आवाज। गाँव में आम की छांव में खेलते बच्चे जिनकी उम्र महज चार - पांच साल की है।उन्हें देखभाल की जरूरत है,परंतु यहाँ तो उनकी देखभाल में उनके अपने छोटे भाई - बहन हैं। इनके माता - पिता सुबह ही काम पर निकल गये हैं। इनके लिए अल्यूमिनियम के कटोरे और बर्तनों में नमक मिला भात, जब भूख लगे खाने के लिए रखा गया है। जो खेल सकते हैं आपस में गोटियों - पत्थरों से खेल रहे हैं। जो नहीं खेल सकते, कोई कहीं सोया है, कोई रो रहा है। कोई कुछ खा रहा है। सुबह की धूप घूमकर उल्टी दिशा में चली गई। बच्चे धूप में पड़े हैं। किसी के तन पर कपड़ा है। कोई ऐसे ही है। साफ-सफाई का तो दूर-दूर तक कोई नामोनिशान नहीं। किसी बच्चे की नाक से सफेद - पीला द्रव मुंह में आ रहा है। बच्चा उसे चाट रहा है। भूख - प्यास से परेशान रो रहा है। बड़ा भाई दोस्तों के साथ खेल में मशगूल है। माता - पिता तो पहाड़ी पर ज्यादा पैसा बनाने की होड़ में हैं। यह पहाड़ी पर गिट्टी तोड़ने का पहला साल था। अपने - अपने ग्रुप में सबसे ज्यादा पैसा कमा लेने की प्रतिद्वंदिता थी। बड़े बच्चों के भरोसे छोटे बच्चों को अकेले छोड़ने का प्रयोग था। कितनी धूप, कितनी धूल, बच्चों ने आम के नीचे झेला, किसी को नहीं पता। मौसम बदला तो सेमल का भूत जागा। बार - बार गाँव वालों से गुहार हमने की थी कि जो बीमार हो जाएं उन्हें शहर में डॉक्टर को दिखाया जाए। पर, जो स्वभाव गाँव में है ही नहीं, वैसी बातें समाज में जल्दी घर नहीं करती। परम्पराएं एकाएक टूटती नहीं। जिस पर एक बार विश्वास हो जाए और वह भी भ्रम फैलाने में सक्षम हो तो उस पर से विश्वास सहज टूटता नहीं।

आज सब तरफ हरियाली है। आम का पेड़ अब भी पूर्ववत खड़ा है। जिन परिवारों ने बच्चे खोए वहाँ इस हरियाली में भी वीरानी है। आज इस हरियाली में भी सड़क का वह हिस्सा वीरान लगता है जहाँ कल एक विशाल सेमल का पेड़ खड़ा हुआ करता था। आज वहाँ उसका सूखा हुआ तना पड़ा है। यह जताते हुए कि तुम लोगों ने अपने अपनों को खोया, देखो हमने भी अपनी हरियाली खोई। जीवन खोया। आओ मिलकर चिंतन करें कि इस वर्ष हम सबसे क्या चूक हुई। क्या पाया हमने और क्या खो दिया है। यह वक्त हमें क्या सीख दे गया है। परंतु, उसकी यह सीख बेजुबान है। बेआवाज़ है। उसकी आवाज कोई सुने तो सुने कैसे ?

***

महावीर प्रसाद द्विवेदी और हिंदी नवजागरण

डॉ महेश्वरी रंगनाथन

सेवानिवृत्त वरिष्ठ राजभाषा अधिकारी/प्रका

हिंदी प्रदेश में नवजागरण 1857 ई. स्वाधीनता संग्राम के साथ शुरु हुआ। महावीर प्रसाद द्विवेदी का जन्म 1864 में दौलतपुर में हुआ (रायबरेली -अब) था। उनकी मृत्यु 1938 में हुई थी (74-उम्र)। हिंदी के आधुनिक काल के प्रथम चरण 1868-1893 को भारतेन्दु युग कहा जाता है। द्वितीय चरण 1893-1918 को द्विवेदी युग कहा जाता है।

द्विवेदी जी ने कठिनाइयों से शिक्षा प्राप्त की थी। स्कूली शिक्षा बहुत साधारण थी। रेलवे में नौकरी मिली। फिर इस्तीफा दे दिया था। हिस्टीरिया रोग से पीडित पत्नी के गंगा में डूबे जाने से 40-42 आयु के आसपास के निस्संतान विधुर पति ने अपना शेष काल पत्नी की स्मृति में बिताने का निर्णय लिया। वे आवश्यकता से अधिक कोमल प्रकृति के थे। अनिद्रा रोग के शिकार हो गए।

सरस्वति एक प्रतिष्ठित पत्रिका थी। उस पत्रिका में अपना लेख छपवाने का प्रयत्न सब लेखक करते और जब न छपती तो शत्रु हो जाते थे। जैसे कबीर ने कहा पेड को पेड ही काटते तैसे सभी लेखकों ने सरस्वति का बायकाट कर दिया था। अपनी आवश्यकतावाले निबंध में द्विवेदी ने जानबूझकर कहा "मैने कभी अपनी आत्मा का हनन नहीं किया" नतीजतन उनके सैकडों शत्रु अपने आप पैदा हो गए।

महावीर प्रसाद द्विवेदी धार्मिक रूढियों और संकीर्ण मतवाद के विरोधी थे। निम्नवर्ग के प्रति उन्हें गहरी सहानुभूति थी। द्विवेदी का सामाजिक दृष्टिकोण मूलत: किसानों का था। राष्ट्रीय स्वाधीनता की भावना इन्हें प्रेरित करती थी। भारत की नारी पर इन्हें विशेष श्रद्धा थी। 1903-1920 के बीच सरस्वति में ऐसे प्रगतिशील तत्वों को आधार बनाकर कई लेख उन्होंने खुद लिखा और दूसरों से भी लिखवाया। राम विलास शर्मा जैसे प्रसिद्ध साहित्य आलोचकों को द्विवेदी के लेखों के प्रति विशेष आकर्षण था। राष्ट्रभाषा हिंदी की जो सेवा द्विवेदी ने की यह आज के भारतीय नहीं भुला सकते।

अपने देश-भाइयों की दुर्गति देखकर उनका कलेजा दहल गया। जो कुछ उन्होंने लिखा अपने भाइयों को जगाने और उनको अपनी दुर्दशा का कारण समझाने के लिए लिखा। सरस्वति राजनैतिक पत्रिका न थी। सरकार का कोप भाजन बनना न चाहा। लेकिन पत्रिका-धर्म का पालन तटस्थ रूप से करना भी चाहते थे। उनका मानना था कि लेखक को सच बात कहने में कभी न डरना चाहिए। निर्भीकता, तटस्थता, भारत के प्रति मानवीय चिंतन आदि से प्रभावित साहित्यकारों का मानना है कि वे आधुनिक हिंदी के निर्माता हैं। विधाता हैं। राष्ट्रभाषा हिंदी के मूर्तिमान स्वरूप हैं।

नवजागरण का अर्थ आलोचकों के अनुसार समाज के आर्थिक, शैक्षिक, मानसिक, लौकिक, अलौकिक, भाषिक, बुद्धिगत क्षेत्रों से संबंधित है। हिंदी नवजागरण से मतलब है कि हिंदी समुदाय, याने हिंदी जाति के साथ- साथ हिंदी भाषा का भी विकास है। सन् 1857 का स्वाधीनता संग्राम हिंदी प्रदेश के नवजागरण की पहली मंजिल है। दूसरी मंजिल भारतेन्दु हरिचन्द्र का युग है। हिंदी नवजागरण की तीसरी मंजिल महावीर प्रसाद द्विवेदी और उनके सहयोगियों का है। सन् 1900 से जब सरस्वती का प्रकाशन हुआ और 1920 तक जब द्विवेदी सरस्वती से बाहर आए, इन दो दशकों की अवधि को द्विवेदी युग की सही पहचान है।

फरवरी 1939 की सरस्वती में श्यामसुंदर दास ने लिखा था - द्विवेदी जी का महत्व उनके लेखों में नहीं। उनका महत्व विशेषकर इसी बात में हैं कि उन्होंने भाषा को परिमार्जित और सुंदर रूप देने का सफलतापूर्वक कार्य किया।

भारतेन्दु युग में पुरानी सामंती व्यवस्था रूढ़िवाद, इत्यादि को बदलवाने की मांग जहाँ वहाँ सुनाई देती है। द्विवेदी युग में वह मांग अधिक उग्र और अधिक व्यापक बन गई है। द्विवेदी जी अर्थशास्त्र के अध्येता हैं। इसके कारण द्विवेदी जी बहुत से विषयों पर ऐसी टिप्पणियाँ लिख सके जो विशुद्ध साहित्य की सीमाएँ लांग जाती है। उन्हें राजनीति, अर्थशास्त्र के साथ साथ आधुनिक विज्ञान का भी अपार ज्ञान था। इसके साथ भारत के दर्शन और विज्ञान की ओर उन्होंने ध्यान दिया। समाजशास्त्र का अध्ययन गहराई से किया। सरस्वती के माध्यम से उन्होंने लेखकों का ऐसा दल तैयार किया जो इस नवीन चेतना के प्रसार-कार्य में उनकी सहायता कर सके। द्विवेदी के अथक परिश्रम से सरस्वती ने एक आदर्श पत्रिका का रूप धारण किया। उन्होंने बड़ी मेहनत से संपत्ति शास्त्र नामक पुस्तक लिखी।

साहित्यिक क्षेत्र में उन्होंने यह तय कर लिया था कि

1 हिंदी गद्य का विकास करना है

2 आधुनिक हिंदी को विविध माध्यमों से आगे बढ़ाना है

3 कविता में ब्रजभाषा की जगह खडीबोली को प्रतिष्ठित करना है

4 साहित्य से रीतिवाद को निकालना है

इस बीस वर्ष की अवधि में उन्हें एकाग्र चित से उददेशित विषय में सफलता प्राप्त हुई है। उन्होंने अपने साहित्य में भारत में अंग्रेजी की स्थिति, भारतीय भाषाओं को शिक्षा का माध्यम बनाने की समस्या, भारतीय भाषाओं के बीच संपर्क भाषा की समस्या, हिंदी-उर्दू की समानता और भेद, हिंदी और जनवादीय उपभाषाओं के संबंध आदि पर बहुत गहराई से विचार किया है।

भारतेन्दु एवं द्विवेदी युगीन लेखकों ने बार-बार लिखा था कि जब अंग्रेजी विलायत से आते थे प्राय: दरिद्र होते थे और जब हिंदुस्तान से अपना देश जाते तो कुबेर बनकर जाते थे। राजकाज का पूरा खर्च सरकारी अफसरों की तनख्वाह से लेकर फौजें रखने और रेलें बनाने तक का खर्च भारत से वसूल किया जाता था। इसलिए जुलाई 1918 की सरस्वती में द्विवेदी ने लिखा प्रजा के हितचिन्तकों की याद है कि इस देश की जमीन प्रजा की है। न राज्य की है, न जमीनदारों की है।

जून 1914 की सरस्वति में जनार्दन भट्ट का लेख छापा था, जिसके जरिये द्विवेदी की यही कामना थी कि वह दिन बड़े ही सौभागय का दिन होगा जब कालेज से निकले हुए नवयुवक अपनी-अपनी सनद को जेब में रखे हुए लोहार और बढई आदि के कामों को करने लगेंगे और काम करते समय मिलने पर शेक्सपियर और मिल्टन, कालिदास और भवभूति से अपना मनोरंजन करेंगे।

महावीर प्रसाद द्विवेदी ईश्वर पर विश्वास करते थे, पर रूढ़िवाद का विरोध करते थे जिसके कारण नास्तिक कहलाए गए। द्विवेदी नीति और सदाचार को धर्म मानते थे। स्वयं एक जगह पर द्विवेदी ने कहा कि जीव मात्र के प्रति दया का व्रत सारे व्रतों का फल हमें दे सकेगा।

द्विवेदी जी वास्तव में क्रांतिकारी रहे और उनका चिंतन अनेक समकालीन विचारधाराओं से बहुत आगे है। द्विवेदी जी ने स्त्री उद्धार, शिक्षा प्रोत्साहन, सामाजिक रूढ़ियों का खण्डन, नवजागरण की प्रेरणा आदि से संबंधित लेखों को प्रोत्साहित किया। द्विवेदी जी का नवजागरण गांधीजी के नवजागरण से बिलकुल भिन्न था।

भाषा समस्या को लेकर द्विवेदी जी ने जो कुछ लिखा है उसकी छानबीन की गई है। द्विवेदी जी कहते हैं भारतीय भाषाओं को चाहे तमिल हो, तेलुगु हो या गुजराती अपनी अस्मिता के लिए, अपने अधिकारों के लिए लडना पड़ा। खासकर उन्होंने मद्रास का उल्लेख करते हुए 1919 के

लेजिसलेटिव कौन्सिल की बैठक में नरसिंह अय्यर द्वारा तमिल में भाषण देते वक्त हुई घटना की याद दिलाई। प्रेमचंद ने इस संदर्भ में आगे कहा कि उस काल में अंग्रेजी के विरुद्ध जिस व्यक्ति ने तमिल का समर्थन किया, वह हिंदी की प्रतिनिधि पत्रिका के संपादक महावीर प्रसाद द्विवेदी थे।

1923 की सरस्वति पत्रिका में द्विवेदी ने गुजराती, बंगला, मराठी आदि भाषाएँ बोलनेवालों से हिंदी को देशव्यापी भाषा के रूप में अपनाने का आग्रह करते हुए अन्य भाषाओं के अधिकारों की भी चर्चा की तथा कहा कि देश-व्यापक भाषा के लिए केवल इतना ही आवश्यक है कि इस विस्तीर्ण देश में जितनी भिन्न-भिन्न भाषाएँ प्रचलित हैं उनके उत्तमोत्तमग्रन्थों का प्रतिबिम्ब देश-व्यापक भाषा में उतारा जाएँ। किसी भाषा का कोई भी ग्रन्थ हो, उसकी प्रतिमा हिंदी में आनी चाहिए। अंग्रेजी की तरफदारियों से द्विवेदी पूछते हैं कि तीस करोड़ (उस समय की जनसंख्या) भारतवासियों की ज्ञान-बुद्धि क्या इन अंग्रेजी के मुट्ठीभर लेखकों ही से हो जाएगी?

फरवरी 1917 की सरस्वति में उन्होंने एक टिप्पणी की कि अगर हिंदी को व्यापक भाषा की दर्जा देनी है तो (1) हिंदी प्रचारकों को तैयार करके अहिंदी प्रांतों को भेजना है (2) हिंदी प्रचार सभाएं अधिकाधिक सरकारी या अर्द्ध-सरकारी संस्थाएं बनाकर प्रचार-प्रसार करना है।

द्विवेदी जी को खड़ीबोली में रचित भारतेन्दु की कविताएँ बहुत अच्छी लगती थीं। उन्होंने सरस्वती में भारतेन्दु की खूब तारीफ की। यही नहीं भारतेन्दु कालीन लेखक बालकृष्ण भट्ट, काशता खत्री, दुर्गा प्रसाद मिश्र आदि के लेख प्रकाशित किया तथा उनके प्रगतिवादी चिंतन से पाठकों को परिचित कराया। द्विवेदी जी अनुवाद को प्रोत्साहित करते थे। उन्होंने हिंदीतर भाषाओं में उपलब्ध अच्छे-अच्छे साहित्यों का अनुवाद करने का अनुरोध किया। उन्होंने कहा कि इस समय विज्ञान, इतिहास, यात्रा, जीवनचरित और समालोचनाओं की हिंदी में बड़ी भारी न्यूनता है। इस न्यूनता को पूरा करना हिंदी-साहित्यकारों का परम धर्म है।

द्विवेदी जी ने सरस्वति का उपयोग कभी भी व्यक्तिगत ख्याति के लिए नहीं किया। उन्होंने ज्ञान विज्ञान से लेकर कथा साहित्य एवं कविता तक उपयुक्त ढूँढने में अथक परिश्रम किया तथा सफलता पाई। इनका मूल विचार हम **प्रगतिशील – तत्व और पूंजीवाद का विरोध** कह सकते हैं।

श्याम चरण राय की टिप्पणी में कहा गया था कि सम्पत्ति किसी एक मनुष्य की नहीं है, किन्तु समाज की है, किसी भी मनुष्य को उसके उपभोग करने का कोई अधिकार नहीं है। यदि कोई मनुष्य समाज के लिए कोई काम नहीं करता तो उसे सम्पत्ति का उपभोग करने का भी अधिकार नहीं है। द्विवेदी जी इस मत से सहमत थे कि श्रमदान के माध्यम से ही भारत की स्थिति सुधर सकती है। श्रमिकों को एक साथ जुटाने के लिए व्यवसाय समिति कायम होने की उन्होंने मांग की। द्विवेदी का यह चिंतन क्रांतिकारी था। उन्होंने फ्रान्स, जर्मण, इंग्लैंड और अमेरिका का हवाला देते हुए कहा कि वहाँ लोहे, लकड़ी, चमड़े, कोयले, कपड़े आदि के व्यवसायों में लगे श्रमजीवियों ने अपनी-अपनी समितियां बना रखी है। इस तरह की समितियाँ यहां भी बनने की कामना की थी उन्होंने।

सरस्वति ज्ञान की पत्रिका है। इसका उद्देश्य स्वाधीनता की चेतना का प्रसार करना है। उस जमाने की पत्रिकाओं की तुलना में सरस्वति आदर्श पत्रिका थी। इस देश के निर्धन एवं पीड़ित किसान के लिए द्विवेदी ने बहुत कुछ किया था। तत्कालीन भारत की समस्याओं पर भारत की बहुसंख्यक किसान जनता को केन्द्र मे रखकर उन्होंने विचार किया था। भारत के मज़दूर वर्ग के संगठन और संघर्षो से उन्हें अति दिलचस्पी थी। उनका दृढ़ विश्वास था कि मजदूर वर्ग संगठित होकर अपना भाग्य बदल सकता है।

संक्षेप में कहना है तो द्विवेदी जी एक युग द्रष्टा थे, युग सृष्टा थे। साहित्य सेवा एवं सामाजिक सेवा एक साथ करते थे। उनके नवजागरण चिंतन ने भाषा और समाज दोनों पर गहरा प्रभाव डाला है। द्विवेदी जी एक युग-पुरुष हैं।

***

श्री भगवद् गीता के विभिन्न सोपान और आधुनिक समाज

डॉ.पी.आर.वासुदेवन 'शेष',
हिन्दी अधिकारी, (सेवानिवृत्त),
महालेखाकार कार्यालय (ले व हक),चेन्नै

श्री भगवद् गीता एक ऐसा दैवीय संगीत है जिसे भगवान श्रीकृष्ण ने स्वयं गाया है। यह विचार किये जाने योग्य है कि जिस शब्द रचना को बाँसुरी वादक मुरली मनोहर ने स्वयं गाया हो, उसका स्वर और संगीत कितना प्रभावशाली होगा। पद्मनाभ भगवान की नाभि से साक्षात वेद मूर्ति ब्रह्मा आविर्भूत हुए, उनके पाद-पद्म से कर्म कलुष धोने वाली गंगा उजपी है। अतः उनके मुख पद्म से भगवद्गीता का प्रादुर्भाव गीता की सर्वोपरि स्थिति का ही द्योतक है।

श्रीभगवद्गीता भारत के महानतम ऐतिहासिक ग्रंथ महाभारत का एक भाग है जो विश्व का सबसे लंबा संग्रह है, जिसमें एक लाख श्लोक हैं। भगवद् गीता 5000 वर्ष पूर्व सारथी कृष्ण और अर्जुन के बीच का वार्तालाप है जो उच्चतम आध्यामिक ज्ञान का विषय है। गीता शुद्ध ज्ञान है। इस ज्ञान को किसी संप्रदाय से जोड़ना उचित नहीं है। गीता समझने का ग्रंथ है। यह भारत का प्राचीन मनोविज्ञान है। किसी संप्रदाय रूपी रंगीन ऐनक को लगाकर इसे पढ़ने से गीता के मर्म तक नहीं पहुँचा जा सकता। भगवद् गीता जीने की कला प्रस्तुत करती है। गीता हमें इस बात की शिक्षा देती है कि हमें कैसे होना चाहिए , कैसे सोचना चाहिए और क्या करना चाहिए ?

ध्यान योग में श्रीकृष्ण, अर्जुन को योगी बनने की सलाह देते हैं, क्योंकि एक योगी, ज्ञानी और तपस्वी दोनों से भी श्रेष्ठ है। वह मानव और ईश्वर की एकात्मकता को समझता है। सभी योगियों में जो उनकी भक्ति करता है वह श्रेष्ठतम होता है। ईश्वर और योगी के सबंध की तुलना सिर्फ शरीर और आत्मा के संबंध से की जा सकती है।

व्यक्ति को अपने आपको स्वयं के प्रयास से ऊपर उठना चाहिए। मनुष्य अपना ही मित्र और अपना ही शत्रु दोनों है। जिसने निज को पहचान लिया है वह सभी परिस्थितियों में पूरी तरह से स्थिरचित्त रहता है। वह गर्मी और सर्दी, सुख और दु:ख, मान और अपमान से अप्रभावित रहता है। वह निर्धनता और संपन्नता के बीच शांति से रहता है। स्थिरता और धैर्य की स्थिति से कभी विचलित नहीं होता। जो मित्रों और विरोधियों पापियों और पुण्यात्माओं को एक समान दृष्टि से देखता है , वही सर्वश्रेष्ठ होता है।

भगवदगीता में मानसिक साधना की एक विधि दी गई है। जो चेतना को अटूट रूप में साधारण जाग्रतावस्था से उठाकर उन ऊँचे स्तरों तक पहुँचा सकती है, जो लगता है कि अब तक जैसे पर्दे के पीछे से काम कर रहे थे , इस विधि को ध्यान योग कहते हैं। कर्म का त्याग नहीं, बल्कि उस संकल्प या उस रचनात्मक इच्छा शक्ति का त्याग करना होता है जो बस अपने ही लक्ष्यों को पूरा करना चाहती है

– अनाश्रित कर्मफलं कार्यं कर्म करोति य:
सन्यासी च योगी च न निरग्निर्न चाक्रिय: ॥

श्रीकृष्ण बताते हैं कि अष्टांगयोग पद्धति मन तथा इन्द्रियों को वश में करने का साधन है। किन्तु इस कलियुग में सामान्य मनुष्य के लिए ऐसा कर पाना कठिन है। इस संसार में मनुष्य अपने परिवार के पालनार्थ तथा अपनी सामग्री के रक्षणार्थ कर्म करता है किंतु कोई भी मनुष्य बिना किसी

स्वार्थ, किसी व्यक्तिगत तृप्ति के कर्म नहीं करता। कर्म प्रत्येक व्यक्ति का कर्त्तव्य है क्योंकि सभी लोग परमेश्वर के अंश हैं। शरीर के अंग पूरे शरीर के लिए कार्य करते हैं शरीर के अंग अपनी तृप्ति के लिए नहीं, अपितु शरीर की तृप्ति के लिए कार्य करते हैं –

आरुरुक्षोर्मुनेर्योगं कर्म कारणमुच्यते
योगारूढस्य तस्यैव शम: कारणमुच्यते ।।

परमेश्वर से युक्त होने की विधि योग कहलाती है, इसकी तुलना उस सीढ़ी से की जा सकती है। जिसमें सर्वोच्च आध्यात्मिक सिद्धि प्राप्त की जाती है।यह सीढ़ी जीव की अधम अवस्था से प्रारंभ होकर आध्यात्मिक जीवन के पूर्ण आत्म साक्षात्कार तक जाती है। विभिन्न चढ़ावों के अनुसार इस सीढ़ी के विभिन्न भाग भिन्न भिन्न नामों से जाने जाते हैं किंतु कुल मिलाकर यह पूरी सीढ़ी योग कहलाती है और इसे तीन विभागों में विभाजित किया जा सकता है ज्ञान योग, ध्यानयोग तथा भक्तियोग।

उद्धरेदात्मनात्मानं नात्मानमवसादयेत्
आत्मैव ह्यात्मनो बन्धुरात्मैव रिपुरात्मन: ।।

आत्म शब्द का अर्थ शरीर , मन तथा आत्मा होता है। योग पद्धति में मन तथा आत्मा का विशेष महत्व है। चूँकि मन ही योग पद्धति का केन्द्र बिंदु है अत: इस प्रसंग में आत्मा का तात्पर्य मन होता है। योग पद्धति का उद्देश्य मन को रोकना तथा उसे इन्द्रिय विषयों के प्रति आसक्ति से हटाना है –

जितात्मन: प्रशान्तस्य परमात्मा समाहित:
शीतोष्णसुखदु: खेषु तथा मानापमानयो : ।।

गीता का अनुवाद विश्व की अधिकतम भाषाओं में हो चुकी है।दुनिया भर में कई बुद्धिजीवियों ने गीता पर मंथन किया है। विद्वानों , आध्यात्मिक गुरुओं ने इसका अध्ययन किया है और इससे मिलने वाली शिक्षाओं को महत्वपूर्ण बताया है। हमारे ऋषि मुनियों, आचार्यों एवं कई विद्वानों ने गीता के भाष्य लिखे हैं जिनके अध्ययन करने पर हम गीता की महत्ता , ज्ञान एवं निहित संदेश को समझ सकते हैं।

गीता में जीवन को सही दिशा देने वाला संदेश है इसीलिए हम सभी को गीता पढ़नी चाहिए। जीवन जीने की कला यदि कोई सिखा सकता है तो वह गीता से ही कर सकता है। आधुनिक समाज में जितनी भी समस्याएं हैं उनका निवारण केवल गीता में है। गीता की दिव्यता आस्था ही स्वतंत्रता है।

गीता विश्व का एकमात्र ऐसा ग्रंथ है जो मानव को जीने का ढंग सिखाता है। गीता मनीषी स्वामी ज्ञानानंद का मानना हे कि गीता जीवन में प्रेम का पाठ पढ़ाती है, प्रेम में शांति निहित होती है। प्रेम ही जीवन का आधार है। जिसके जीवन में प्रेम है उसके जीवन में शांति है। दुर्योधन के जीवन में प्रेम नहीं था। इसलिए दुर्योधन ने गोविंद को माँगने के बजाय सेना व शस्त्र माँगा। जिसके मन में अहंकार, ईर्ष्या व द्वेष जैसी प्रवृत्तियाँ आ जाती हैं उसका पतन निश्चित होता है। क्योंकि ये प्रवृत्तियाँ दीमक की तरह इंसान को अंदर से खोखला कर देती हैं।

श्री अरबिंदो ने गीता के बारे में कहा है कि गीता ईश्वरानुभूति की अभिव्यक्ति है। ईश्वर का अनुभव करने वाले गुरुओं का ज्ञान गीता है। महाभारत वास्तव में एक मानव का शारीरिक युद्ध है और संकेतात्मक रूप से बताता है कि ईश्वर का अनुभव करने में बहुत संघर्ष और कठिन परिश्रम की आवश्यकता है।निष्काम कर्म का ज्ञान गीता का मुख्य उद्देश्य है। साधक के क्षमतानुसार गीता के अध्यायों में कर्म योग को प्रमुखता दी गयी है फिर ज्ञान एवं फिर भक्ति योग साधना के आधार पर बाद में हैं। ज्ञान के बिना भक्ति संभव नहीं है। इसीलिए साधक को बिना कर्म और ज्ञान सिद्धि की साधना में नहीं जाना चाहिए। संस्कृत भाषा के ज्ञान से ही गीता को सही अर्थों में समझा जा सकता है।

गीता का न केवल आध्यात्मिक बल्कि वैज्ञानिक , राजनीतिक एवं ऐतिहासिक महत्व भी है। व्यक्ति अधिकार के साथ कर्त्तव्यों का भी ध्यान रखेगा तो दुनिया से सभी बुराइयाँ खत्म हो जाएंगी। दुनिया को सामाजिक रूप से निरोगी बनाया जा सकता है। इसी में वैश्विक शांति का सार छिपा है। आज सबसे बड़ी चुनौती बनता जा रहा है आतंकवाद। इसका भी गीता द्वारा समाधान खोजा जा सकता है। अहिंसा के पुजारी महात्मा गांधी ने गीता का अनुसरण करके ही स्वतंत्रता संग्राम में लगे स्वतंत्रता सेनानियों को राह दिखाई। दुनिया भर में कई बुद्धिजीवी ने गीता द्वारा दिखाए गए राह पर चले हैं।

निष्कर्ष में कह सकते हैं कि आज की दुनिया के सभी देशों की परेशानियाँ, आतंकवाद, युद्ध , विनाश, मानव मात्र की जीवन की सभी समस्याओं आदि का समाधान भगवद् गीता में से प्राप्त किया जा सकता है। इसमें जिंदगी का निचोड है। गीता कल्पतरू है इससे मानव जो पाना चाहता है वह उसे मिल जाता है। गीता में निहित विभन्नि सोपान एवं संदेश पूरी मानवता के लिए विश्व बंधुत्व का मूल मंत्र है।

****

सिनेमा में कैमरे की भूमिका

डॉ. सुकांत सुमन
कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी
हिंदी अनुभाग, इंदिरा गांधी परमाणु अनुसंधान केन्द्र,कल्पाक्कम

फिल्म बनाने की प्रक्रिया को फिल्म-निर्माण शब्द से जाना जाता है। यह एक गैर-रेखीय पद्धति (non-linear methodology) है जो फिल्म-निर्माताओं के व्यावहारिक अनुभवों से उपजी है। फिल्म-निर्माण में कई तत्व शामिल होते हैं, और मोटे तौर पर यह काफी जटिल प्रक्रिया है। किसी भी फिल्म को अपने निर्माण काल में कई चरणों से गुजरना होता है, जिसमें प्राथमिक स्तर पर फिल्म की कहानी का विचार, पटकथा लेखन, कास्टिंग, शूटिंग, ध्वनि रिकॉर्डिंग और प्री-प्रोडक्शन, संपादन तथा फाइनल स्क्रीनिंग शामिल होता है।

किसी फिल्म, टेलीविजन शो या वेब सीरीज में फोटोग्राफी और दृश्यों द्वारा कहानी को कहने की उत्कृष्ट कला को सिनेमैटोग्राफी कहा जाता है जिसमें कैमरा की गति, कैमरा का कोण, फ्रेमिंग, प्रकाश व्यवस्था, संरचना, लेंस की विविधता, रंग, फोकस, एक्सपोजर आदि घटक शामिल हैं। रचनाकार की कल्पना से ओतप्रोत स्क्रिप्ट के शब्दों को कैमरा कला, गति, रंग, प्रकाश और ध्वनि का अद्वितीय संयोजन करके दृश्य के रूप में लाता है । कैमरा के माध्यम से निर्देशक किसी फिल्म का निर्माण करता है और दर्शकों को अपने फिल्म की काल्पनिक दुनिया में ले जाता है, जहाँ दर्शक कुछ समय के लिए उसी आभासी दुनिया को सच मान कर उससे अपना तादात्म्य स्थापित कर लेता है।

पिछले कुछ वर्षों से तकनीकी प्रगति और विभिन्न तकनीकी पहलुओं की बेहतर समझ के कारण, नवोन्मेषों ने आधुनिक सिनेमा का मार्ग प्रशस्त किया है। उदाहरण के लिए, कैमरा और छवियों को कैप्चर करने के लिए उपयोग किए जाने वाले उपकरणों का पिछले कुछ वर्षों में अत्यधिक विकास हुआ है, जिससे यह प्रक्रिया पहले की तुलना में बहुत आसान और अधिक आरामदायक हो गई है।

कैमरा: अर्थ, स्वरूप एवं अवधारणा: कैमरा शब्द लैटिन के *कैमरा ऑब्स्क्योरा* (*camera obscura*) से आया है जिसका अर्थ होता है- अंधेरा कक्ष। कैमरा सबसे पहले कैमरा ऑब्स्क्योरा के रूप में आया। इसका आविष्कार ईराकी वैज्ञानिक इब्न-अल-हुज़ैन ने किया। इसके बाद अंग्रेज वैज्ञानिक राबर्ट बॉयल एवं उनके सहायक राबर्ट हुक ने सन 1660 के दशक में एक सुवाह्य (पोर्टेबल) कैमरा विकसित किया। सन् 1685 में जोहन जान ने ऐसा पोर्टेबल कैमरा विकसित किया जिससे तस्वीरें लेना व्यावहारिक रूप से आसान था।

कैमरा प्रौद्योगिकी की प्रगति ने फिल्मों के निर्माण की प्रक्रिया में क्रांति ला दी है। इसने कहानी कहने और दृश्यों को सौंदर्ययुक्त प्रदान करने की नई संभावनाएं प्रदान की हैम। कैमरा एक शक्तिशाली उपकरण है जो सिनेमा के कलात्मक और तकनीकी पहलुओं को आकार देता है तथा कहानी कहने की प्रक्रिया में गहराई, परिप्रेक्ष्य और तल्लीनता जोड़ता है। कैमरे की रचना, कोण, गति और फ़ोकस को इस प्रकार से विकसित किया गया है कि भावनाओं, मनोदशा और अर्थ को कैप्चर करने में

सक्षम हो। इसका उपयोग अंतरंग क्लोज़-अप, विस्तृत पैनोरमिक शॉट्स या गतिशील एक्शन दृश्यों को बनाने के लिए किया जाता है। कैमरे के तकनीकी पहलू, जैसे प्रकाश, रंग, क्षेत्र की गहराई, दृश्य आदि कहानी को और आगे बढ़ाते हैं। दरअसल कैमरा सिनेमा में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है, लेंस के रूप में कार्य करता है जिसके माध्यम से दर्शक कहानी को दृश्यों के माध्यम से अनुभव करते हैं। यह फिल्म की दृश्य भाषा का निर्माण करते हुए निर्देशक की रचनात्मक दृष्टि को पकड़ता है और उसे परदे पर उतारता है।

वास्तव में भारतीय जीवन में सिनेमा ने दस्तक तब दी जब हरिश्चंद्र सखाराम भाटवडेकर ने जिन्हें सावा दादा के नाम से भी जाना जाता है, लुमियर ब्रदर्स की फिल्म के प्रदर्शन से प्रभावित होकर इंग्लैंड से कैमरा मंगवाया था। दरअसल लुमियर ब्रदर्स ने ही 1895 में पहली बार कैमरे का प्रयोग किया था और पहली बार कैमरे का प्रयोग कर सिनेमा की नींव तैयार की थी। उन्होंने 45 सेकेंड की पहली चलती फिल्म बनाई थी। सन् 1910 में वे भारत आए और यहाँ 'द लाइफ ऑफ क्राइस्ट' फिल्म की प्रदर्शनी चलाई। इस अचंभित कर देने वाली प्रस्तुति से ही दर्शक दीर्घा में बैठे दादा साहेब फाल्के को भी सिनेमा बनाने की प्रेरणा मिली थी।

अगर कैमरे के शुरूआती स्वरूप पर विचार करें तो अपने आकार के कारण सिनेमा में इसका प्रयोग इतना आसान नहीं था। सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय द्वारा राजधानी दिल्ली के सीरीफोर्ट ऑडिटोरियम कॉम्पलेक्स में भारतीय सिनेमा के 100 वर्ष पूरे होने के उपलक्ष्य में शताब्दी फिल्म फेस्टिवल का आयोजन किया गया था। वहां ऑडिटोरियम के मुख्य फोयर (खंड) में सौ वर्ष पहले इस्तेमाल किए गए कैमरे, लाइट, साउंड रिकॉर्डर, नाग्रा आदि की प्रदर्शनी लगी हुई थी जिसमें फिल्म निर्माण के शुरूआती दौर में प्रयोग किए गए विभिन्न प्रकार के कैमरे एवं लेंस प्रदर्शित थे। मुख्य फोयर में एंट्री करते ही 800mm लेंस की प्रदर्शनी की गई थी। जाइंट लेंस का वजन लगभग 25 किलोग्राम था जिसका प्रयोग कैमरे में किया जाता था। काले रंग के इस लेंस को उठाने के लिए तीन से चार लोगों की आवश्यकता होती थी। इसका इस्तेमाल 1960 के दशक में होता था। इसे वन्य प्राणियों और खेल के दृश्यों की शूटिंग के लिए आदर्श माना जाता था। 1950 एवं 60 के दशक में प्रयुक्त होने वाले एरीकोर्ड 35mm कैमरे एक ही समय में दो अलग-अलग कामों में प्रयोग में लाए जा सकते थे। यह कैमरा सिनक्रोनाइज्ड शूटिंग के लिए इस्तेमाल में लाया जाता था। रूस निर्मित कोरवास 35mm कैमरा डॉक्यूमेंट्री और न्यूज कवरेज के लिए प्रयोग में लाया जाता था। इनका 50 और 60 के दशक में प्रयोग किया जाता था। बम स्पोर्टिंग 35mm कैमरे का इस्तेमाल युद्ध के दृश्यों को फिल्माने के लिए किया जाता था। यह कैमरा विमान से एरियल दृश्य फिल्माने के लिए उपयुक्त था। परंतु समय के साथ कैमरे छोटे हो गए हैं, इसलिए उन्हें हर संभव दिशा में ले जाने के लिए नई तकनीक का लगातार आविष्कार किया जा रहा है। वर्तमान में सबसे अधिक उपयोग किए जाने वाले कुछ पेशेवर डिजिटल मूवी कैमरों में एरी एलेक्सा, ब्लैकमैजिक डिज़ाइन सिनेमा कैमरा, कैनन सिनेमा ईओएस, पैनविज़न जेनेसिस, रेड एपिक, रेड स्कार्लेट, सोनी सिनेअल्टा आदि शामिल हैं।

सिनेमा में कैमरे का उपयोग विभिन्न प्रकार से होता है जिसमें कैमरा मूवमेंट, कैमरा लेंस, कैमरा फोकस, शॉट साइज, शॉट फ्रेमिंग, कैमरा एंगल, कैमरा गियर आदि प्रमुख हैं।

कैमरा मूवमेंट- कैमरा मूवमेंट एक फिल्म निर्माण तकनीक है जिसमें कैमरे की गति के माध्यम से फ्रेम या बैकग्राउंड में बदलाव किया जाता है। कैमरा मूवमेंट के अंतर्गत सिनेमैटोग्राफर और निर्देशक किसी दृश्य में फ्रेम को बिना काटे ही दूसरे दृश्य में बदल सकते हैं। फ़िल्म में विशिष्ट प्रकार का कैमरा मूवमेंट भी दर्शकों पर मनोवैज्ञानिक और भावनात्मक प्रभाव पैदा कर सकता है । इन प्रभावों का उपयोग किसी फिल्म को अधिक प्रभावशाली और आकर्षक बनाने के लिए किया जा सकता है। कैमरा मूवमेंट के अंतर्गत निम्न प्रकार के शॉट आते हैं- स्टेटिक शॉट, पैन शॉट, टिल्ट शॉट, पुश इन शॉट, ट्रैकिंग शॉट, डॉली ज़ूम शॉट, आर्क शॉट, रोल शॉट इत्यादि।

कैमरा लेंस- हर प्रकार के कैमरा लेंस में विशिष्ट गुण और दृश्य विशेषताएँ होती हैं, जिन्हें प्रत्येक फिल्म-निर्माता को समझना आवश्यक है। वैसे तो कैमरा लेंस विभिन्न प्रकार के होते हैं। लेकिन कई लेंस एक साथ दो अलग-अलग प्रकार की विशेषताओं वाले भी हो सकते हैं। मसलन एक प्राइम लेंस स्टैंडर्ड लेंस भी हो सकता है। या ज़ूम लेंस पारफ़ोकल लेंस भी हो सकता है। उसी प्रकार लाँग फोकस लेंस, टेलीफोटो लेंस भी हो सकता है।

कैमरा फोकस- फिल्मांकन हेतु जिस प्रकार शॉट साइज, कैमरा फ्रेमिंग, कैमरा एंगल और कैमरा मूवमेंट महत्वपूर्ण है, ठीक उसी प्रकार कैमरा फोकस का ध्यान रखना भी फिल्मांकन के लिए बेहद जरूरी है। कैमरा फोकस केवल यह सुनिश्चित नहीं करता कि फ्रेम में आ रही छवि स्पष्ट और विस्तृत है या नहीं, बल्कि इसका महत्व इससे कहीं ज्यादा है। निर्देशक और कैमरामैन विभिन्न उद्देश्यों के लिए फिल्म या फोटोग्राफी की डेप्थ एरिया में हेरफेर कर सकते हैं। इसी कड़ी में हम विभिन्न प्रकार के कैमरा फोकस की समीक्षा करने जा रहे हैं, कैमरा फोकस किसी भी दृश्य को जीवंतता प्रदान करने में योगदान देता है।

कैमरा शॉट आकार- किसी फ्रेम में सब्जेक्ट का कितना हिस्सा कैसे प्रदर्शित होगा या फ्रेम में प्रदर्शित वीडियो, फोटो या एनीमेशन की सेटिंग किस प्रकार की होगी यह शॉट साइज के अंतर्गत आता है। फिल्म या वीडियो में विभिन्न प्रकार के कैमरा शॉट्स अलग-अलग कथात्मक मूल्य संप्रेषित करते हैं, जिसे पोस्ट-प्रोडक्शन के दौरान संयोजित किया जाता है। अधिकांश फिल्म निर्माता शॉट आकार के लिए मानक/स्टैंडर्ड नामों का उपयोग करते हैं, जिन्हें अक्सर शॉट लिस्ट या स्टोरीबोर्ड पर 2-3 अक्षरों में संक्षेपित किया जाता है। उदाहरण के लिए, एक क्लोज़ अप शॉट को संक्षेप में "CU" या एक वाइड शॉट को "WS" के रूप में दर्शाया जाता है।

शॉट फ्रेमिंग - जब निर्देशक शूट करने के लिए शॉट की सूची बनाना शुरू करता है, तो वह सबसे पहले जेहन में प्रत्येक शॉट की एक तस्वीर बनाता है। पात्र कहाँ स्थित हैं? क्या फ्रेम संतुलित या सीधा है? जब एक शॉट में एक से अधिक पात्र हों तो क्या होगा? ये सभी निर्णय कैमरा फ्रेमिंग से जुड़े होते हैं। कैमरा फ्रेमिंग का अर्थ, निर्देशक/कैमरामैन के शॉट्स में विषयों के स्थान एवं स्थिति से है। निर्देशक अपने विषयों को जिस प्रकार व्यवस्थित करने की योजना बनाता है, इसके आधार पर उसे अपना कैमरावर्क

समायोजित करने की आवश्यकता होती है। सेट पर पहुंचने से पहले वह अपने फ्रेमिंग विवरण को शॉट सूची में शामिल करता है। इस तरह उनके पास दृश्य के बारे में एक स्पष्ट विचार होता है और वह आसानी से अपने दृष्टिकोण को दर्शकों तक संप्रेषित कर सकता है।

कैमरा एंगल - फ्रेम में किसी पात्र या चरित्र को शक्तिशाली, विशाल अथवा कमजोर दिखाने, दो पात्रों के बीच की घनिष्टता को प्रदर्शित करने अथवा इसी प्रकार के अन्य उद्देश्यों के लिए कैमरा शॉट में एंगल (कोण) का महत्व काफी बढ़ जाता है। इस प्रकार केवल शॉट का आकार समझना ही पर्याप्त नहीं है। कैमरे का एंगल और उस एंगल की डिग्री से किसी शॉट के अर्थ को पूरी तरह से बदलने का सामर्थ्य होता है। आई लेवल शॉट, लो एंगल शॉट, हाई एंगल शॉट, काउबॉय शॉट या हिप लेवल शॉट, नी लेवल शॉट, ग्राउंड लेवल शॉट, शोल्डर लेवल शॉट, डच एंगल या डच टिल्ट शॉट, ओवरहेड शॉट, हवाई अथवा एरियल शॉट आदि कैमरा एंगल के कुछ प्रकार हैं।

कैमरा रिग्स और गियर- एक बार जब तय हो जाता है कि निर्देशक अपने प्रोजेक्ट में फिल्म में किस प्रकार के कैमरा मूवमेंट, फोकस, एंगल आदि का उपयोग करना चाहता है, तो यह निर्धारित करना महत्वपूर्ण हो जाता है कि इसे प्राप्त करने के लिए किस उपकरण का उपयोग किया जाए। विभिन्न प्रकार के कैमरा रिग और गियर होते हैं जो लगभग हर कैमरा मूवमेंट को पूरा कर सकते हैं। कुछ विभिन्न प्रकार के कैमरा रिग्स और गियर हैं- हैंडहेल्ड कैमरा रिग, कैमरा ट्रायपॉड, पेडेस्टल, फिल्म क्रेन और कैमरा जिब, ओवरहेड कैमरा माउंट, कैमरा डॉली और स्लाइडर रिग, कैमरा स्टेबलाइजर, स्नोरिकैम, विकल माउंट, ड्रोन कैमरा, कैमरा मोशन कंट्रोल, वाटरप्रूफ हाउसिंग आदि।

भारतीय मनोरंजन उद्योग को दुनिया के सबसे बड़े उद्योगों में से एक माना जाता है जो प्रति वर्ष 20 से अधिक भाषाओं में प्रति वर्ष लगभग 2,000 फिल्में बनाता है। तकनीक के क्षेत्र में होने वाली उत्तरोत्तर प्रगति ने मनोरंजन उद्योग को फिल्म निर्माण के स्तर पर पेशेवर एवं व्यावसायिक होने के लिए और फिल्मों के विकास, निर्माण, वित्त, वितरण और विपणन के लिए नई तकनीकों को अपनाने के लिए मजबूर किया है। इसके अलावा, एक आम धारणा बन चुकी है कि फिल्म बनाने का व्यवसाय फिल्म से भी अधिक महत्वपूर्ण हो गया है। हालाँकि, कला, संस्कृति और उद्यम की धारणाओं का एक साथ आना दुनिया भर में सिनेमैटोग्राफ़िक प्रस्तुतियों के लिए आम बात है। समय के बढ़ते, तीनों का मार्जिन धीरे-धीरे इस कदर धुंधला हो गया है कि एक फिल्म निर्माता की स्थिति एक उद्यमी और एक निर्माता के रूप में ज्यादा मजबूत हो गई है।

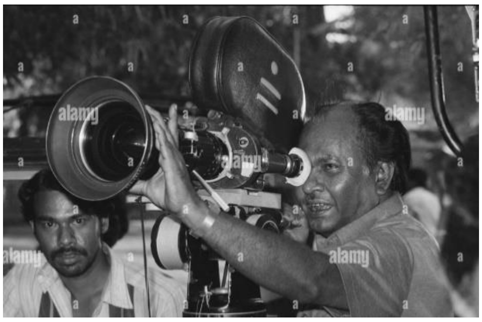

***

नागार्जुन और बिष्णु प्रसाद राभा की कविताओं का तुलनात्मक अध्ययन

जितेन्द्र कुमार गुप्ता
प्रवर श्रेणी लिपिक
इंदिरा गांधी परमाणु अनुसंधान केंद्र परमाणु ऊर्जा विभाग, कल्पाक्कम

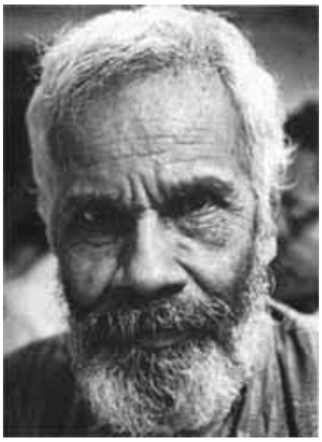

हिन्दी कविता का आधुनिक काल काफी उर्वरक रहा है। इस काल की हर साहित्यिक युग की कविताओं का स्वर विविधिताओं से भरा हुआ है। भारतेंदु युग से समकालीन कविता तक, आधुनिक काव्य को राजनीतिक चेतना अलग-अलग तरीके से प्रभावित एवं संचालित करती आ रही है। राष्ट्रवाद, गांधीवाद, मार्क्सवाद आदि राजनैतिक विचारधारों ने हिन्दी साहित्य के फलक को वृहत आयाम दिया है। परन्तु एक राजनीतिक आन्दोलन के रूप में सबसे स्पष्ट स्वर हिन्दी साहित्य के प्रगतिवादी काव्यधारा में दिखाई देता है। जनकवि नागार्जुन का सम्बन्ध हिन्दी साहित्य की इसी काव्यधारा से है। उनकी कविता मार्क्सवादी विचारधारा से अनुप्राणित हैं जो समाज के शोषित, पीड़ित वर्ग के पक्ष में हमेशा खड़ी दिखाई देती है।

ठीक उसी समय असमिया साहित्य में एक ऐसे कवि का आविर्भाव हुआ जिसने असमिया साहित्य को राजनीतिक और सांस्कृतिक स्तर पर एक मुखर अभिव्यक्ति दी है। उनका साहित्य आज असमिया साहित्य में विशेष स्थान रखता है। 31 जनवरी 1909 ई। को ढाका (बांग्लादेश) में बिष्णु प्रसाद राभा का जन्म हुआ जो आगे जाकर असमिया साहित्य के शिखर रचनाकार के रूप में प्रतिष्ठित हुए।

नागार्जुन का जन्म बिहार के मधुबनी जिले में 30 जून 1911 ई। को हुआ। नागार्जुन एक ऐसे कवि थे जो अपने समय और समाज की जरूरतों के प्रति आवाज मुखरित करना अपनी प्राथमिकता समझते थे। उनका अधिकांश काव्य शोषित, पीड़ित वर्ग की समस्याओं और सत्ता के दमन के खिलाफ संघर्ष की अभिव्यक्ति रहता है। नागार्जुन के काव्य के अध्ययन से उस समय की राजनैतिक परिस्थितियों, सामाजिक संरचना, साहित्यिक सौंदर्य आदि का पता चलता है। स्वाधीनता आन्दोलन के दौरान राजनीति का जो स्वरूप निर्धारित हो रहा था, खासकर स्वाधीनता प्राप्ति के बाद देश की राजनीतिक अवस्था जैसी बनी, उसमें नागार्जुन जैसे कवि के लिए उदासीन होकर बैठ पाना संभव नहीं था।

जिस समय नागार्जुन हिन्दी पट्टी में जनता की इच्छा और आकांक्षाओं का स्वर बुलंद कर रहे थे ठीक उसी समय असमिया साहित्य में बिष्णु प्रसाद राभा भी इसी विचारधारा के साथ अपने काव्य के माध्यम से उस क्षेत्र के जनांदोलनों को अभिव्यक्ति दे रहे थे। साहित्य, रंगमंच, अभिनय, निर्देशन, असम के सांस्कृतिक जीवन का शायद ही कोई कोना हो जिस पर बिष्णु राभा की छाप न हो। नागार्जुन की तरह बिष्णु राभा की कविताओं में भी सत्ता की दमनकारी नीतियों के खिलाफ आक्रोश झलकता है। उनका पूरा साहित्य समाज के निचले तबकों के शोषित, पीड़ित, उपेक्षित और दबे कुचले लोगों के निमित्त है और साथ ही वे असमिया संस्कृति को भी अपनी रचनाओं के माध्यम से प्रस्तुत करते हैं।

नागार्जुन के राजनीतिक व्यंग इस बात का प्रमाण है कि उनमें राजनीति के महत्व की पूरी और गंभीर समझ है। समाज और देश की प्रगति के प्रति नागार्जुन अपनी प्रतिबद्धता दर्शाते हुए कहते हैं:

"प्रतिबद्ध हूँ, सम्बद्ध हूँ, आबद्ध हूँ,
प्रतिबद्ध हूँ, जी हाँ, प्रतिबद्ध हूँ,
बहुजन समाज की अनुपल प्रगति के निमित्त
संकुचित 'स्व' की आपाधापी के निषेधार्थ।"

बिष्णु प्रसाद राभा स्वाधीनता आन्दोलन में सिर्फ अंग्रेजों का ही विरोध नहीं करते हैं बल्कि समाज के उन शोषक वर्गों का भी विरोध करते हैं जो अपने ही देश की साधारण जनता का शोषण करते हैं। वे लिखते हैं-

"देशे आछे दुइटी पाठा
एक्टि कालो एक्टि शादा
जोदि देशेर मोंगल चाऊ
दुईटी पाठाके बोली दाऊ"

(इस देश में काले और गोरे दो तरह के शोषक चेहरे हैं, अगर हम इस देश का मंगल चाहते हैं तो हमें उन दोनों की बलि देनी होगी)

उनकी ज्यादातर कवितायें किसानों और मजदूरों के हक में लिखी गयी हैं। स्वाधीनता आंदोलन के दौरान वे किसानों को अंग्रेजों के खिलाफ लड़ने के लिए प्रोत्साहित करते हुए लिख़ते हैं:

"हल कूर दा हातुरी लोई रोनो लोई जाऊ बोल
आगबढ़ी जाऊ बोल आगबढ़ी जाऊ बोल
ओ बनुआ होमोनिया आगबढ़ी जाऊ बोल"

दोनों रचनाकारों की राजनीतिक कविताओं को पढ़कर कई बार हमे ऐसा लगता है कि- नागार्जुन में हम बिष्णु राभा को पढ़ रहे हैं और राभा में नागार्जुन को पढ़ रहे हैं।

नागार्जुन स्वयं को जनकवि घोषित करते हुए कहते हैं:

"जनता मुझसे पूछ रही हैं क्या बतलाऊँ
जनकवि हूँ मैं साफ़ कहूँगा क्यों हकलाऊँ"

ठीक उसी तरह बिष्णु प्रसाद राभा अपने आप को कलाकार स्वीकार करते हुए कहते हैं कि- "आपलोग मुझे कलाकार मानते हैं। अगर में सच में कलाकार हूँ तो वह भगवान ने नहीं बल्कि आमजन ने गढ़ा है।"

प्रथम दृष्टया हम देख सकते हैं कि अलग-अलग भाषा क्षेत्र में ये दोनों कवि अपनी कविताओं के माध्यम से न सिर्फ जनता के दुःख दर्द को, उनकी पीड़ा को साहित्यिक अभिव्यक्ति दे रहे थे बल्कि सरकारी दमन और तानाशाही के खिलाफ खुद भी सड़कों पर आजीवन संघर्ष करते रहे तथा प्रतिरोध की संस्कृति विकसित करते रहे। इस प्रकार दो भिन्न भाषिक क्षेत्रों के साहित्यकार एक ही काल खंड में अपने समय की जरूरतों को साहित्यिक स्वर दे रहे थे और जनता को जागृत कर रहे थे। दोनों कवियों की कविताओं का स्वर लगभग एक जैसे रहा है तथा उनकी विचारधाराएँ भी एक जैसी हैं।

***

आज़ादी का अमृत महोत्सव

नवीन कुमार 'पटनी'
लेखा परीक्षक, प्रधान निदेशक कार्यालय (वा.ले.प),, चेन्नै

नयी सुबह की नई किरण से, जन- जन में उत्सव होगा
हीरक जयन्ती आज़ादी का, अब तो अमृत महोत्सव होगा
एक बाग, सपूतों ने सींचा था, खून से अपने सीने के
एक - एक कर के पौध लगाए, उन्होंने बड़े करीने से
इक फूल खिलाने की ख़ातिर, कइयों ने अपने प्राण दिए
तोड़ परतंत्रता की जंजीरें , आज़ादी का वरदान दिए
उसी आजादी के गौरव की, वंदना होगी, महोत्सव होगा
नयी सुबह की नई किरण से .....
हीरक जयन्ती आज़ादी का ....

बँटा देश, सीमित संसाधन, फिर भी हमने संधान किया
तिनकों को यूँ जोड़- जोड़ के, अपने नीड़ का निर्माण किया
जो असाध्य था जग में सबको, सबको ही साध्य बना डाला
इस नए मुल्क ने, पूरे विश्व पर, अपना परचम लहरा डाला
इसी पौरुष के अमरत्व का, गुणगान करें, उत्सव होगा
नयी सुबह की नई किरण से .....
हीरक जयन्ती आज़ादी का ......

पर निज देश के ही कोने में, अभी भूखा बच्चा रोता है
बारिश में आँखे रोती है, कहीं सड़क किनारे सोता है
कौन है कितना प्रलयकारी, कितना कौन विध्वंसक है
बेरोजगारी - महंगाई का ये होड़ बड़ा ही हिंसक है
पार पाएंगे इक दिन इनसे, तब निश्चित ही विजयोत्सव होगा
नयी सुबह की नई किरण से .....
हीरक जयन्ती आज़ादी का ......

भारत की सुंदर बगिया में किसने, ये बीज विष के बोये हैं
समरसता को आग लगाने वाले, चैन से अब तक सोये हैं
प्रेम सौहार्द की पावन धरती पर, कब तक ये अचरज होगा
लड़ते रहेंगे कब तक यूँ हम, कब तक मुद्दा मजहब होगा
जलेगी इक दिन जाति-पाती, फिर हर घर में दीपोत्सव होगा
नयी सुबह की नई किरण से .....
हीरक जयन्ती आज़ादी का ......

इक अभिलाषा, एक चेतना, अब एक मात्र प्रयोजन होगा
विश्व पटल पर, माँ भारती के, आरती का गुंजन होगा
दंगों में न लोग कटेंगे,
रंगों में न लोग बटेंगे, अब कोई हाथ न खून में रंगा होगा
रंग एक ही राज करेगा, हर उर में छपा तिरंगा होगा
तिरंगा हर घर में फहरेगा, हर दिन तब तिरंगोत्सव होगा
नयी सुबह की नई किरण से, जन- जन में उत्सव होगा
हीरक जयन्ती आज़ादी का, अब तो अमृत महोत्सव होगा

***

लोग कहते हैं

अरुण विकास,
वरिष्ठ अनुवादक,
प्रधान निदेशक कार्यालय (वा.ले.प), चेन्नै

लोग कहते हैं कहते रहेंगे
लोग मरते हैं मरते रहेंगे
जब आदमी जीवित रहकर भी
जीना छोड़ दे
जब वह हो जाए शून्य
जब उसे काठ मार जाए
औरों के विचारों से
तब धूमिल हो जाता है
उसका पौरुष।

उस भाव-शून्यता पर
हावी हो जाता है
आदमी का दूसरा रूप
हो जाता वह कायर क्रूर
हो जाती है उसकी इच्छा
औरों को कुचल देने की
और जब पाता है
ऐसा कारक
जिस कारक पर टिका हो
आदमी का मान-सम्मान स्वाभिमान
तब ढाह देता है वह उस स्तंभ को।

अपने साथ हुई क्रूरता को
सहता है आदमी तब तक
जब तक वह पुनः संचित नहीं कर लेता
अपनी शक्ति और साहस को।

अनुकूल समय के साथ
झपट पड़ता है आदमी
आदमी पर
और हो जाता है महाभारत।
***

जब तुमने कहा था वो बेटी है , वो क्या करेगी !!!

गौरव वत्स

सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

कार्यालय महानिदेशक,लेखापरीक्षा, द.रे

हाँ मैं रोया था उस दिन,
जब तुमने कहा था वो बेटी है, वो क्या करेगी।

उसके सपनों को अपनी आंसुओं से धोया था उस दिन,
जब तुमने कहा था, वो बेटी है पढ़ कर क्या करेगी।

बहुत बेबस सा महसूस किया था उस दिन,
जब उसके हिस्से के सपनों को रौंदकर अपना पल्ला झाड़ा था,
जब वो डॉक्टर बनना चाहती थी, और हमने उसे दुल्हन बनाया था,
हर पल, हर क्षण, उसकी इच्छाओं को दबाकर अपने घर का मान बढ़ाया था |
तो, हाँ मैं रोया था उस दिन।
जब तुमने कहा था वो बेटी है, वो क्या करेगी।

मैं रोता हूँ आज भी।
क्योंकि वो आज भी कहीं सिसक रही है,
किसी का घर बनाने की खातिर खुद किसी कोने में सिमट रही है,
किसी दरिंदे की हवस से लेकर घर वालों की इज़्ज़त का
बोझ ढ़ोती खुद सबके इशारों पर थिड़क रही है |

तो हाँ मैं रोता हूँ आज भी,
क्योंकि अपने इंसान होने की कीमत, वो आज भी एक लड़की होकर चुका रही है!

***

क्या आप संतुलित भोजन लेते हैं?

लता वेंकटेश
सहायक निदेशक(रा.भा.),आकाशवाणी

हमारी परंपरा ऐसी है कि कोई अतिथि अपने घर आए, तो उनसे कहा जाता है, "भोजन खाकर ही जाना।"दोपहर के समय, सह कर्मचारियों से अक्सर ऐसा वार्तालाप होता है,

" खाना हो गया"?

"जी...। जी...। आपका?"

हाँ, बिलकुल।

अनेक समय,ऐसे संवाद औपचारिक भी बन जाते हैं।

कहने का मतलब है, भोजन का अभाव किसी भी जीव को दुख देता है। इसमें हम मानव का क्या कहें! मानव की मूलभूत आवश्यकताएँ है- भोजन,आवास,वस्त्र। लेकिन अक्सर मूलभूत आवश्यकताएँ अपनी सीमा लाँघकर शिखर को छू लेती हैं, खासकर भोजन। (जिनके पास इनका अभाव है, उनके बारे में यहाँ चर्चा नहीं है।)

आजकल,कार्यालय में बैठक हो, तो चायपान की व्यवस्था ! किसी का जन्म दिन हो, एस.के.सी.(स्वीट,कारम,काफी) ! किसी का कार्यग्रहण तारीख! मिठाई! सेवा निवृत्ति!- मध्याह्न भोजन! जितना खाना शरीर के लिए पर्याप्त है,उतने से अधिक मात्रा में खाया जाता है। शादियों व पर्वों में तो कहने की जरूरत ही नहीं। तीनों जून,तीनों दिन,भोजन ही भोजन। भोजन के अंतराल में, स्नैक्स! उसके अंतराल में, 'फल रस', 'साफ्ट ड्रिंक्स'! कभी भी यह सोचा नहीं जाता कि लगातार खाते रहने से शरीर की, सेहत की, क्या दशा होगी!यह तो अवश्य कहते हैं कि शरीर मंदिर है, शरीर रूपी मंदिर का गर्भ-गृह मन है। मन पाक रहने से उसमें ईश्वर का वास होता है। सुनने के लिए ये बातें अच्छी लगती हैं, पर क्या कभी यह सोचा जाता है कि सचमुच शरीर को पवित्र माना गया तो इतने सारे कचरे पेट में क्यों डाले जाते?

सामान्यतः मेहनती जीवन न होने पर पुरुष के लिए लगभग 2000 कैलोरी और नारी के लिए लगभग 1800 कैलोरी ऊर्जा की आवश्यकता पड़ती है। अधिक कसरत किये जाने पर थोड़ा बहुत कैलोरी की जरूरत होती है। हमारी भोजन पद्धति में तीनों जून खाना खाने से आराम से यह मात्रा पार हो जाती है। तब उस आहार से शरीर में संचरित होनेवाले शर्करा दैनिक आवश्यकता की पूर्ति के बाद वसा बनकर शरीर में जम हो जाते हैं। इसका नतीजा मोटापन !

अब आपके मन में यह प्रश्न उठेगा, हम तली हुई पदार्थों के साथ साथ चावल,गेहूँ, मैदा आदि से बने खाद्य पदार्थ भी तो खाते हैं !वे कैसे वसा बनकर जमेंगे ? प्रधानतः खाद्य पदार्थों में मौजूद कार्बोहाइड्रेट शर्करा याने ग्लूकोस में विघटित होते हैं। इनकी चयापचयन प्रक्रिया में इनसुलिन की अधिक आवश्यकता पड़ती है। अंडे, मिलेट, साग, सब्जियाँ, दाल, दलहन, फलीदार सब्जियों में मौजूद कार्बोहाइड्रेट 'काम्पलेक्स कार्बोहाइड्रेट' कहलाये जाते हैं जो अमिनो एसिड में विघटित होकर अन्य प्रकियाओं से गुज़रकर रक्त में मिलने के कारण इनकी चयापचयन प्रक्रिया में इनसुलिन की कम आवश्यकता पड़ती है। फाइबर युक्त पदार्थ की पाचन प्रक्रिया में आंतों में मौजूद 'गट बैक्टीरिया' प्रमुख भूमिका निभाते हैं। इनके चयापचयन के लिए भी इनसुलिन की आवश्यकता नहीं है। मोटे तौर पर हम यह कह सकते हैं कि अत्यधिक कार्बोहाइड्रेट भी वसा बनकर शरीर में इकट्ठे हो जाते हैं। लगातार कार्ब युक्त पदार्थ खाते रहेंगे, तो मोटेपन से बच नहीं सकते।

<u>अग्न्याशय (पैंक्रियास)</u>

इनसुलिन की उत्पत्ति अग्न्याशय में होती है। अग्न्याशय(पैंक्रियास) मानव पेच में स्थित लंबे पत्ते रूपी अवयव है जो पाचन प्रक्रिया से जुड़ा है। यह पाचन प्रक्रिया, रक्त में शर्करा मात्रा का

नियंत्रण कार्य, दोनों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। इस अवयव से उत्पन्न इनसुलिन रक्त शर्करा मात्रा को कम करता है तो इससे उत्पन्न ग्लूकगान रक्त में शर्करा मात्रा कम होने से लिवर में ग्लूकोजन के रूप में संचित ग्लूकोस को रिलीज़ कराकर रक्त में शर्करा मात्रा को बढ़ाता है। इस प्रकार पैंक्रियास दो विरोध कार्यों का संतुलित निर्वाह करता है।

इनसुलिन का अभाव

हम यह सोच सकते हैं कि इनसुलिन की आवश्यकता पर क्यों बातें होती है? शर्करा याने ग्लूकोस जो शरीर की कोशिकाओं को ऊर्जा प्रदान करता है, इनसुलिन के सहारे से ही उन कोशिकाओं के अंदर प्रवेश कर सकते हैं। इनसुलिन के बिना जो ग्लूकोस रक्त में होंगे, उन्हें कोशिकाएँ स्वीकृत नहीं करती हैं। जब तक शरीर में इनसुलिन उत्पादन की कमी नहीं होती है, तब तक ग्लूकोस का कोशिकाओं के अंदर का प्रवेश, अधिक शर्करा का ग्लूकोजन और वसा में परिवर्तन आदि प्रक्रियाओं में रुकावट नहीं होती। शरीर की दैनिक आपूर्ति के बाद बचे अधिक शर्करा खून में गुजरते हुए लिवर के पास जाते हैं। लिवर इनहें ग्लूकोजन में परिवर्तित कर खुद अपने भंडार में संचित रखता है। संचयन की सीमा पार होने पर उन्हें वसा बनाकर त्वचा के नीचे के प्रदेश से लेकर जहाँ जहाँ जगह मिली, वहाँ-वहाँ संचित रखता है। जब शरीर में इनसुलिन उत्पत्ति की कमी होने लगती है,जब इनसुलिन प्रतिरोध की समस्या शुरु होती है, तब इनसुलिन युक्त ग्लूकोस के कोशिका-प्रवेश के लिए भी दिक्कतें शुरु होती हैं तो अत्यधिक शर्करा का क्या कहें ? यह स्थिति डायबटीस टाइप II नाम से जानी जाती है।

डायबटीस टाइप II

डायबटीस टाइप II में इनसुलिन की अपर्याप्तता और इनसुलिन प्रतिरोध दोनों कारणों से ग्लूकोस की मात्रा खून में बढ़ती रहती है। ग्लूकोस स्वीकृति में कोशिकाएँ हड़ताल करने के कारण शरीर को ऊर्जा नहीं मिलती है और इसके परिणामस्वरूप शरीर में थकान होती है,व्यक्ति के अपने दैनंदिन के कार्य निर्वाह में असंतुलन आ जाता है।यही नहीं,रक्त में शर्करा की मात्रा लगातार अधिक रहने से शरीर में सूजन बढ़ता है,सामान्य चोट के ठीक होने के लिए भी समय लगता है। फास्टिंग शुगर 200 से कम नहीं..., पी.पी.350..., एचबीए1सी 12.. ऐसी परेशानियों से व्यक्ति को गुजरना पड़ता है। मधुमेह नियंत्रण पर न होने से व्यक्ति के आंतरिक अवयवों जैसे गुर्दा,हुदय आदि की कार्य प्रणाली में भी बाधाएँ उत्पन्न होती हैं।

डायबटीस टाइप II में दवाओं की भूमिका

चिकित्सक के परामर्श पर दवाएँ नियमित रूप से लेने से रक्त में शर्करा की मात्रा नियंत्रण में रहती है। एचबीए1सी भी वांछित स्तर पर रहता है। लेकिन दवाओं की भी सीमा होती है,दवाओं से रक्त में शर्करा की मात्रा नियंत्रण पर न होने से व्यक्ति को बाहर के इनसुलिन पर आश्रित होना पड़ता है। चिकित्सक कभी यह नहीं कहते कि मात्र दवाओं से मधुमेह काबू में रहेगा।

नियमित व्यायाम

आम तौर पर उम्र बढ़ने के साथ मानव शरीर की मांस पेशियाँ कमजोर होने लगती हैं,उनमें इनसुलिन प्रतिरोध बढ़ने लगता है। अर्थात, इनसुलिन का उत्पादन शरीर में होने पर भी काफी कसरत न होने के कारण मांस पेशियों में इनसुलिन प्रतिरोध शुरु होता है। नियमित व्यायाम,पैदल चलना आदि आदतें, मांसपेशियों को सुदृढ़ करती हैं और उनकी सुदृढता के लिए ऊर्जा की आवश्यकता भी बढ़ती है। तब बाध्य होकर कोशिकाएँ शर्करा-प्रवेश के लिए अपने द्वार खोल देती हैं। इस प्रक्रिया से रक्त ग्लूकोस की मात्रा कम होती है और देह को आराम मिलता है। इसका नतीजा, फास्टिंग शुगर 200 से 110 में घटता है।अतः चिकित्सकों का प्रमुख परामर्श होता है,नियमित व्यायाम।

संतुलित भोजन

शरीर की कोशिकाओं के मूल तत्व हैं, डी.एन.ए.। डी.एन.ए के हर कार्य के लिए प्रोटीन की आवश्यकता है। तो हमारे शरीर के हर अवयव,त्वचा से लेकर हड्डियों तक के निर्माण कार्य, उनकी समृद्धि, मजबूतीकरण के लिए प्रोटीन की आवश्यकता है। लेकिन प्रोटीन के बारे में कई मिथक बातें फैली हुई हैं- प्रोटीन ज्यादा लेने से किडनी खराब हो जाएगा वगैरह... वगैरह...। लेकिन आश्चर्य की बात यह है कि कार्बोहाइड्रेट अधिक लेने के विषय पर कोई मिथक कहानी नहीं है ! असल में, अधिक गतिशील न होनेवाली जीवन शेली से युक्त किसी वयस्क व्यक्ति के लिए उनके वजन के प्रति किलो के लिए 0.8 ग्राम प्रोटीन रोज लेना है।

उदाहरण के रूप में, अगर कोई व्यक्ति 60 किलो के वजन के हैं, तो उनकी दैनिक आवश्यकतावाली प्रोटीन की मात्रा 48 ग्राम है। अगर व्यक्ति की जीवन शैली में, गतिशीलता है, याने, वह रोज कसरत करता हो, तो यह मात्रा बढ़ती है। क्या हम नियमित मात्रा में प्रोटीन लेते हैं? सामान्यतः नहीं। अधिक कार्बोहाइड्रेट युक्त भोजन है हमारा! इडली,दोसा,खिचड़ी,भात,आप्पम, पुट्टु, उपमा, समोसा, सभी में भले ही थोड़ी मात्रा में प्रोटीन हो, अधिकतर कार्बोहाइड्रेट ही है। चिकित्सक द्वारा पूछे जाने पर, अनेक लोग कहेंगे कि "डाक्टर, मैं मात्र मध्याह्न भोजन के लिए भात लेता हूँ, सुबह और शाम 'टिफन' लेता हूँ। यह 'टिफन' क्या होता है ? यह भी कार्बोहाइड्रेट है। उनके साथ क्या सुंडल, दाल, सब्जी लिये जाते? न बाबा न ! उनके साथ जो चटनी या इडली पाउडर लिया जाता है, उनमें प्रोटीन की मात्रा बहुत ही कम है। तो क्या इन्हें खाना नहीं चाहिए? ऐसा नहीं है। हमारी थाली में, सिंपल कार्ब युक्त पदार्थ कम मात्रा में लेते हुए, काप्लेक्स कार्ब, प्रोटीन, याने दाल, दलहन,फलीदार सब्जी की मात्रा बढ़ाते हुए, फाइबर युक्त पदार्थ- तरकारी, फल आदि की मात्रा को बढ़ाना है। यदि व्यक्ति 'डायबटीक' हैं, तो धीरे धीरे,पालिश किया हुआ चावल लेने से बचकर, साबुत चावल,मिलेट लेना लाभदायक है। साबुत धान में, फाइबर भरपूर मात्रा में होता है और इसलिए खाने के बाद भरा-भरा लगता है। इससे हम अधिक खाना खाने से भी बच जाते हैं। लेकिन पालिश किये हुए चावल से बनी भात से पेट नहीं भरती, तो हम ज्यादा खाना खा लेते हैं। अतः भात हो या रोटी,इनके साइढ डिश प्रोटीन और फाइबर युक्त पदार्थ होना आवश्यंभावी है।

चिकित्सक हमेशा कहते हैं कि खाते समय थाली को पलट कर रख लें ताकि सब्जियों वाला पक्ष आपके समीप हो और कार्ब वाला पक्ष सामने हो । हमेशा जिस प्रकार सब्जियाँ कम लेते, उस प्रकार कार्ब को कम लें। हमें यह ध्यान में लेना है कि हर जून के भोजन में प्रोटीन और फाइबर की मात्रा अधिक हो। डायबटीज हो, मोटापन हो, स्वास्थ्य की हर समस्या के लिए संतुलित भोजन की आवश्यकता है।

नियमित व्यायाम, संतुलित भोजन स्वस्थ जीवन प्रदान करता है। दुनिया के कुछ प्रदेशों में लंबे उम्र तक लोग जीते हैं। शोध में यह पाया हुआ है कि उनके लंबे उम्र के लिए उनकी गतिशील जीवन शैली और संतुलित भोजन प्रमुख कारण हैं। हमारे जीवन में भी हम गतिशीलता लाएँ, जीवन शैली को बदलें, संतुलित भोजन लें, हमारे बच्चों को भी इस विषय पर अभ्यस्त करा दें ताकि स्वस्थ जीवन सब जी पाएँ यही आज की अत्यधिक आवश्यक कार्य है ।

***

खेल-खेल में सीख

डॉ.ए.श्रीनिवासन

वरिष्ठ राजभाषा अधिकारी,चेन्नै मंडल, द.रे

तमिल में एक कहावत है जिसका अर्थ – जो कोई जब कभी भी किसी को भी या कुछ भी देखता है और उससे कुछ-न-कुछ सीखता है तो वह पंडित हो जाता है। (*கண்டது கற்க பண்டிதன் ஆவான் – காண்பனவற்றிலிருந்து கற்றுக்கொள்பவன் பண்டிதன் ஆவான்*) इस कहावत को पढने के बाद मैं ने कई बातों को वैसे तो सीखा है फिर भी जिन बातों को क्रिकेट से सीखा है उन्हें मैं महवपूर्ण मानता हूँ।

क्रिकेट के बारे में मशहूर कथन यह रहा कि 11 खिलाड़ी खेलते हैं और 11 हज़ार बेवकूफ उसे देखते हैं। यह शायद इसलिए कहा गया है कि इस खेल में शारीरिक श्रम दूसरे खेल की तुलना में बहुत कम है। समय की मांग के अनुसार ही उस खेल का रूप भी बदलता रहा। पहले पांच दिन खेलते थे। फिर एक दिवसीय मैच बना। अब तो 20-20। आगे और भी बदल सकता है। स्थानीय, राष्ट्रीय, अंतरराष्ट्रीय खेल के साथ-साथ आजकल आईपीएल आदि भी आ गया। विभिन्न देश के खिलाड़ी एक टीम बनकर खेलते हैं। खेल का अनुभव भी बढ़ता है और मैत्री-भाव भी।

सबका अपना-अपना हीरो होता है। किसीको राजनीतिज्ञ, तो किसीको नायक, और किसीको बहुत बड़ा बिजनेसमेन या सबसे बड़ा धनवान। पसंद होने के कई कारण हो सकते हैं । प्राय: अपना विचार, उनके विचार से मिल जाता है तो आसानी से लगाव हो जाता है या उनके गुण का अनुसरण करने का मन होता तो भी वे पसंदीदा हो जाते हैं।

महेन्द्र सिंह धोनी जो भारतीय टीम के पूर्व कप्तान थे मुझे बहुत पसंद हैं और मेरे लिए आदर्श भी हैं। जब वे मशहूर थे होटल में रिसेप्शनिस्ट ने उन्हें न पहचाना और नियम के मुताबिक अपनी कार्रवाई की । प्राय: ऐसे में सब नाराज़ होते हैं। जबकि धोनी ने उसे स्वभाविक माना और उस रिसेप्शनिस्ट का ही ऑटोग्राफ मांगा। विपरीत ध्रुव क दूसरे की ओर आकर्षित होते हैं – इस मुहावरे के अनुकूल उन्होंने उस रिसेप्शनिस्ट को अपनी धर्म-पत्नी बनाना चाहा और बनाया भी।

इसी प्रकार स्वयं भारतीय क्रिकेट टीम में होते हुए भी जब एक बार विशेष बस में जा रहे थे तब एक महिला ने सचिन का ऑटोग्राफ चाहा तो उन्होंने सचिन से अनुरोध कर ऑटोग्राफ दिलाया। मतलब **अहं** का भाव या गर्व बिलकुल नहीं रहा। जीवन जिस रास्ते पर चलता है उसी पथ को अपनाते हुए आगे बढ़ने की क्षमता या भाव उनमें था। भगवदगीता से लेकर सारे तत्व यही बताते हैं और ऐसे ही होने के लिए कहते हैं।

एक बार जब टीम मैनेजर ने कहा – जब जीतते हैं तो तुम जाकर प्रेस को डील करो और जब हार जाते हैं तो टीम के सर्वोत्तम खिलाड़ी को डील करने के लिए भेजो। तब तुरंत धोनी ने बताया कि माफ़ कीजिए। जब हार जाते हैं तभी तो मुझे जाना है क्योंकि प्रेसवाले बहुत सारे उल्टे सीधे प्रश्न पूछेंगे।

सबका उत्तर देना है। जबकि जब जीत जाते हैं तब तो प्रेसवाले केवल हँसी-मजाक के प्रश्न पूछेंगे जिसका उत्तर देना आसान है। तब सर्वोत्तम खिलाड़ी को भेजेंगे। यही सच्चे कप्तान या लीडर का गुण है।

धोनी ने तीनों प्रकार के क्रिकेट खेल में विश्व-कप जीते हैं। कई आईपीएल कप जीते हैं। उन तस्वीरों को देखेंगे तो पता चलेगा कप प्राप्त करते ही उसे टीम के खिलाडियों के यहाँ देकर स्वयं चुपके से पीछे चले जाते हैं। एकाध में तो हमने देखा कि अपनी बेटी के साथ खेलना भी शुरू कर दिया। जब इस संबंध में पूछा गया तो उनका उत्तर था – अपना सर्वोत्तम कार्य-निष्पादन प्रदर्शित करना है। उसका परिणाम जो कुछ भी हो वह तो सेकण्डरी-फल है।

सबका कहना है कि इस ज़माने में भी धोनी फोन का उपयोग ज्यादा नहीं करते। कहा जाता है कि टीम में रहते समय होटल में उनके कमरे का ताला कभी नहीं लगता। जो चाहे, जब चाहे मिल सकते हैं। पर फोन पर उनसे बात करना नामुमकिन है। सीएसके के मालिक ने भी एक बार कहा था कि उनसे संपर्क करना है तो मैं भाभी साक्षी से संपर्क करता हूँ और उसे फोन करने के लिए बताता हूँ। जब फुरसत है, फोन जब उठाते हैं तभी मेरे कॉल देखकर बुलाते हैं। फोन को फोन के जैसे उपयोग करना भी उनसे सीखना है।

एक और घटना है – जब विराट कोहली को टेस्ट मैच से उनके अपने बुरे या बदतर फार्म के कारण रेस्ट दे दिया गया तब वे स्वाभाविक रूप में दुखी थे। उनका ढाढस बांधते हुए किसी ने फोन नहीं किया, न ही घर पर आए या मैसेज भेजा। उन्होंने कहा कि केवल एक व्यक्ति ने मुझसे संपर्क किया और वह था महेन्द्र सिंह धोनी। और मुझे विश्वास दिलाया। हालांकि उस समय धोनी क्रिकेट से सन्यास ले चुके थे। *உடுக்கை இழந்தவன் கை போலே ஆங்கே இடுக்கண் களைவதாம் நட்பு* A friend in need is a friend indeed का साकार रूप रहा।

कृतज्ञता ज्ञापन जीवन में महत्वपूर्ण है। उनका उम्र चालीस हो गया है। पिछली आईपीएल जीतने के बाद सब सोचने लगे थे कि ज़रूर सभी प्रकार के क्रिकेट से सन्यास ले लेंगे। पूर्ण रूप से रिटायर हो जाएँगे। सभी प्रशंसक उन पर पागल थे। इस प्यार को देखते हुए उन्होंने सोचा कि इन सबको बदले में मैं क्या दे सकता हूँ? तब इन्होंने निर्णय लिया कि कम से कम एक और आईपीएल इन प्रशंसकों के वास्ते खेलूँगा। इसे खुल्लम-खुल्ला प्रेस के सामने बता दिया।

वादा निभाना एक और सीख है। इस वर्ष के आईपीएल के कुछ समय पहले ही उनके पैर पर चोट लगा और डॉक्टरों ने आराम करने की सलाह दी । पर सभी समस्याओं के बावजूद उन्होंने भाग लिया और अपना सर्वोत्तम प्रदर्शन दिया। बहुत ही आश्चर्य की बात है कि पिछली बार तो केवल चेन्नै चेपाक्कम में मैच होने पर ही उनके पागल-प्रशंसक की भीड होती थी। पर अब की बार जहाँ कहीं भी मैच हुआ है वहाँ उनके प्रशंसकों की भीड़ ने वही पीले रंग का टी-शर्ट पहनकर उस प्रदेश के लोगों को आश्चर्य चकित कर दिया । सुनने में आया कि हैदराबाद और गुजरात में तो इतनी भीड़ थी कि मानो मैच चेन्नै में हो रहा हो ।

यह केवल धोनी की बात ही नहीं, सुप्रसिद्ध फुटबॉल खिलाडी मेस्सी को लेंगे तो पेप्सी को अपने प्रेस सम्बोधन के दौरान हटाकर संदेश तो दिया पर साथ ही साथ सारे मार्केट पर उथल-पुथल मच गया। गलती से बॉल टेकर पर अपना शाट लग जाने पर टेन्निस खिलाडी जोकोविच ने स्वयं उससे माफी मांगी और स्वयं को अगले स्तर पर ले जाने के साथ-साथ उस बॉल टेकर को भी जगत प्रसिद्ध करवा दिया। एक बार जब बारिश होने लगी तो जोकोविच के लिए छाता पकड़ते हुए एक लड़का खड़ा था। जोकोविच शरबत पी रहा था एवं फल खा रहा था। अचानक जोकोविच ने उससे छाता लेकर स्वयं को भी बारिश से बचाते हुए और उस लड़के को शरबत पीने एवं फल खाने को कहा। ज़रूर यह दिखावे की बात नहीं है। दिल की बात है। दूसरों से कैसे व्यवहार करना है – यह सिखाने की बात है।

फुटबॉल के सबसे बड़े खिलाड़ी - पीले, मुक्केबाज मुहम्मद अली आदि ने भी अपने-अपने खेल से व्यवहार से ऐसे-ऐसे संदेश दिये हैं कि लोग उन्हें भगवान मानने लगे और कई सीख पाई । हाल ही में संपन्न ओलंम्पिक्स में बारशिम और टाम्बेरी ने प्रथम स्थान को शेर करते हुए उस ऊंची कूद खेल के लिए दो प्रथम स्थान एवं दो गोल्ड मेडल पाये थे। विश्व भर में उन दोनों की प्रशंसा इसलिए हुई कि उनका व्यवहार उच्चतम रहा है। सबके लिए रोल-मॉडल बने है। यही वास्तविक खेल भावना है, खिलाड़ी की निपुणता है।

खेल एक ओर मनोरंजन का साधन है तो वह अप्रत्यक्ष रूप से अनुशासन प्रदान करता है, सब परिस्थितियों का सामना करने की हिम्मत सुझाता है, मैत्री भाव बढ़ाता है, कुशलता प्रदान करता है। कई आदर्श दर्शाता है। जीत की लगातार कोशिश, और हार स्वीकार करने का धैर्य प्रदान करता है।

खेल केवल खेल नहीं है। कोई भी खेल हो, चाहे इनडोर या आउटडोर, दिल एवं दिमाग को एक साथ काम कराने का अभ्यास कराता है। खेल-खेल में सीख है। नज़रिया बदलना है।

***

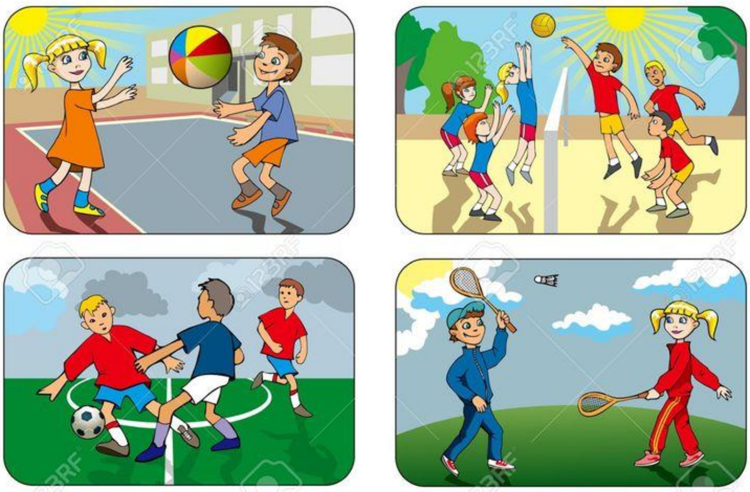

भारत में 2024 का चुनाव: राजनीतिक दायरे

जितेन्द्र कु. जायसवाल,

कनिष्ठ अनुवादक, प्रधान लेखा परीक्षक कार्यालय, ले.प II

लोकसभा चुनाव 2024 ने भारतीय लोकतंत्र के एक महत्वपूर्ण पल को चिह्नित किया है। इसमें जनता जनार्धन ने निश्चित रूप से अपना विचार व्यक्त किया है। इससे पूर्व राजनीतिक दलों को समाज के मुद्दों, अर्थव्यवस्था में सुधार और राष्ट्रीय सुरक्षा के प्रस्तावों पर ध्यान केंद्रित करना पड़ा। समाज में सामाजिक असमानता को कम करने, युवा और महिलाओं के विकास को बढ़ावा देने और अल्पसंख्यक समुदायों को सम्मान देने के उपायों को शामिल करना भी प्रमुख रहा। साथ ही, नागरिक सक्रियता और तकनीकी उपकरणों का सदुपयोग करने की भी जरूरत थी। चुनाव प्रक्रिया में निष्पक्षता और पारदर्शिता को बढ़ावा देना, मतदाताओं की जागरूकता को बढ़ाने और नई तकनीकों का प्रयोग कर सुरक्षित और निष्पक्ष मतदान सुनिश्चित करना अत्यंत महत्वपूर्ण साबित हुआ है।

राजनीतिक महत्व:

विकास, राष्ट्रीय सुरक्षा और आर्थिक परिवर्तन को लेकर जनता की उम्मीदें उच्च रहा। युवा और विशेषज्ञों की भूमिका भी महत्वपूर्ण थी, जिन्हें नई प्रौद्योगिकियों और सामाजिक चुनौतियों का सामना करना था। साथ ही, वैश्विक संदर्भों के तहत भारत का राजनीतिक संघर्ष भी महत्वपूर्ण निकला। मतदाताओं के इस समय के निर्णय और कदमों ने देश के आने वाले समय और सभी क्षेत्र की दिशा तय की है।

सामाजिक और आर्थिक प्रभाव:

चुनावों का न केवल राजनीतिक बल्कि सामाजिक और आर्थिक प्रभाव भी रहता है। इसमें जातिवाद, धर्मनिरपेक्षता और आर्थिक असमानता के मुद्दे महत्वपूर्ण होते हैं। युवाओं, महिलाओं और अल्पसंख्यक समुदायों का समर्थन भी चुनावी प्रक्रिया को प्रभावित करता है। आर्थिक दिशा में, विकास, रोजगार और उत्पादन क्षमता पर चुनाव का प्रभाव रहता ही है। विभिन्न राजनीतिक दलों की आर्थिक नीतियों और सामाजिक कार्यक्रमों का चुनाव के परिणामों पर बड़ा प्रभाव होता है जो देश के विकास में निर्णायक सिद्ध होगा।

विचारधारा के बदलते प्रमुख कारण:

चुनाव में विचारधारा के बदलते कारणों में समाज में बदलते धार्मिक और सामाजिक मूल्यों का प्रभाव महत्वपूर्ण होता है। यहाँ तक कि युवा पीढ़ी का बढ़ता उत्साह भी नए विचारों को संजीवनी देता है। आर्थिक स्थिति, रोजगार और विकास के प्रति जनता की आकांक्षाएं भी विचारधारा में परिणामी रूप से परिवर्तन ला सकती हैं। दृष्टि, नेतृत्व और दलों के राजनीतिक रुख भी महत्वपूर्ण होंगे और अंत में, जनता के सामान्य विश्वास, आत्मविश्वास और भरोसा भी चुनाव परिणामों को प्रभावित करेंगे। ये सभी कारक विचारधारा के परिवर्तन में अपना योगदान देते हैं और चुनावी परिणामों को निर्धारित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

तकनीकी परिवर्तन:

चुनाव में तकनीकी परिवर्तन का महत्व बढ़ रहा है। डिजिटल मीडिया, सोशल मीडिया और इंटरनेट का उपयोग अब चुनावी प्रचार में महत्वपूर्ण हो गया है। इससे प्रतिस्पर्धा में तेजी और अधिक सार्थक चर्चा हो रही है। इलेक्ट्रॉनिक वोटिंग में भी सुधार हुआ है, जिससे चुनाव प्रक्रिया में अधिक निर्भरता और निष्पक्षता आई है। तकनीकी उपकरणों के उपयोग से डाटा विश्लेषण, मतदान पूर्व सर्वेक्षण और चुनावी रणनीति का विकल्प सुगम हो गया है हालांकि इस बार यह उतना सफ़ल न रहा । यह तकनीकी परिवर्तन चुनाव प्रक्रिया को अधिक पारदर्शी और प्रभावी बनाने में मदद कर रहा है वहीं दूसरी ओर चुनाव आयोग के द्वारा **जाने अपने उम्मीदवारों को (Know Your Candidates)** ऐप भारतीय चुनाव आयोग (ईसीआई) द्वारा एक मोबाइल एप्लिकेशन तैयार किया गया है जो नागरिकों को चुनाव लड़ने वाले उम्मीदवारों के आपराधिक इतिहास के बारे में जानने में मदद करता है । यह ऐप एंड्रॉइड और आईओएस दोनों प्लेटफॉर्मों पर उपलब्ध है। केवाईसी ऐप का उपयोग करने के लिए, मतदाताओं को नामांकन की सूची देखने के लिए चुनाव का प्रकार और एसी/पीसी नाम का चयन करना होगा या वे उम्मीदवार को नाम से खोज सकते हैं। इसके बाद ऐप उम्मीदवार के आपराधिक इतिहास, यदि कोई हो, के बारे में जानकारी प्रदर्शित करेगा। इस जानकारी में उम्मीदवार के खिलाफ दर्ज किसी भी आपराधिक मामले का विवरण, उन मामलों की स्थिति और अपराधों की प्रकृति शामिल है। केवाईसी ऐप नागरिकों के लिए किसे वोट देना है, इसके बारे में सटीक निर्णय लेने के लिए एक उपयोगी उपकरण है। इससे मतदाताओं को आपराधिक गतिविधियों के इतिहास वाले उम्मीदवारों की पहचान करने और उन्हें वोट देने से बचने में मदद मिलेगी। यह ऐप चुनावों में पारदर्शिता और जवाबदेही को बढ़ावा देने में मदद करने के साथ-साथ अपने लिए एक सर्वोत्तम उम्मीदवार चुनने में मदद करेगी।

नागरिक सक्रियता:

चुनाव में नागरिक सक्रियता का महत्व बढ़ता जा रहा है। नागरिकों की सक्रियता, समाज की सक्रियता का निर्धारक होता है । नागरिक सक्रियता का अर्थ है एक देश के चुनावी प्रक्रिया में नागरिक कितना उत्साह और सहभागिता ले रहा है। नागरिक सक्रियता चुनावी दलों को जागरूक रखती है, उन्हें जानकारी प्रदान करती है । इसके अलावा, नागरिक सक्रियता लोकतंत्र की मजबूती को बढ़ाती है और जनहित वाले सार्वजनिक नीतियों के निर्माण में सहभागिता भी सुनिश्चित करती है। समाज के नागरिक चुनावी विषयों पर अपने धार्मिक, सामाजिक और आर्थिक दृष्टिकोण से जानकार होते हैं और वे अपने विचारों को व्यक्त करके चुनावी प्रक्रिया में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। इस प्रकार, नागरिक सक्रियता एक स्वस्थ और जीवंत लोकतंत्र के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

निष्कर्ष:

आखिरकार, 2024 का चुनाव भारत के लिए एक महत्वपूर्ण पर्व रहा है । इसमें देश ने कई प्रमुख उम्मीदवारों को हारते हुए देखा और कई नए चेहरे उभरकर आए । 19 अप्रैल से 01 जून 2024 तक सार चरणों में आयोजित यह बृहत जन महोत्सव अभी संपूर्ण हो गया है और देश की जनता ने मतदान देकर नई सरकार का चयन कर लिया है । तनी बड़ी लोकतांत्रिक प्रक्रिया के सफ़ल आयोजन के लिए विश्व भर से हमें सकारात्मक प्रतिक्रियाएं प्राप्त हुई है जो अत्यंत संतोषजनक है ।

***

मेरे शब्दों में हिंदी

तेनमोळी,
सहायक अनुसंधान अधिकारी, (फार्मकॉलजी)
कप्तान श्रीनिवास मूर्ति केन्द्रीय आयुर्वेद अनुसंधान संस्थान

जिस भाषा में एक जुनून है
हमारे राष्ट्र का परम गौरव है।
हृदय जो अपनी धड़कनों की संख्या के अनुसार कार्य करता है
जो भाषा अपने लोगों के साथ मधुर व्यवहार करती है

हमारी आज़ादी के लिए देशभक्तों ने पसीना बहाया,
किसान हमारे भोजन के लिए पसीना बहाते हैं,
लेकिन एकमात्र भाषा जो अपने लोगों के लिए पसीना बहाती है वह
हमारे देश की राजभाषा, राजभाषा हिंदी है।
उस भाषा के माध्यम से
हम एक दूसरे के साथ अटूट बंधन में बंधे।

***

‘अनुवादिनी’ – बहुआयामी मशीनी अनुवाद का एक नवीन और सशक्त मंच

अश्विन आर एस

हिंदी अनुवादक

केंद्रीय विद्यालय संगठन, क्षेत्रीय कार्यालय, चेन्नै

‘अनुवादिनी’ का परिचय

भारत की क्षेत्रीय एवं भाषायी विविधताओं के कारण से मानकीकृत और उच्च गुणवत्ता वाली शैक्षिक सामग्री को विभिन्न क्षेत्रीय भाषाएं बोलने वाले छात्रों के लिए समझने योग्य रूप में वितरित करना, एक कड़ी चुनौती होकर सामने आया है। इसके अलावा, देश में उच्च शिक्षा के केंद्रों में विविध सांस्कृतिक पृष्ठभूमि से आने वाले छात्रों को अलग-अलग भाषाओं के कारण विचारों के आदान-प्रदान में बाधाओं का सामना करना पड़ता है, जो अंततः छात्रों के सहयोग और नवाचार की क्षितिज को सीमित करता है। इन कठिनाइयों को दूर करते हुए शिक्षण, परीक्षण और अनुवाद के लिए प्रौद्योगिकी का लाभ उठाने और इन क्षेत्रों में उन्नत डिजिटल प्रौद्योगिकी को बढ़ावा देने के लिए राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 की परिकल्पनाओं के अनुसार, अनुवादिनी फाउंडेशन की स्थापना शिक्षा मंत्रालय द्वारा 2 अगस्त 2023 को अखिल भारतीय तकनीकी शिक्षा परिषद (ए.आई.सी.टी.ई.) के तत्वावधान में एक गैर-लाभकारी धारा 8 कंपनी के रूप में की गई थी |

अनुवादिनी (https://anuvadini.aicte-india.org/) भारतीय भाषाओं के अनुवाद के लिए एक समर्पित ऑनलाइन मंच (प्लेटफार्म) है। यह कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) और मशीन अधिगम (ML) का उपयोग करके तेजी से सटीक अनुवाद प्रदान करता है। भारतीय संविधान की आठवीं अनुसूची में शामिल सभी 22 भाषाओं के लिए अनुवाद समर्थन प्रदान करते हुए देश की भाषिक दूरियों को कम करने का यह एक सशक्त प्रयास है । इसके अलावा यह मंच शिक्षा सामग्री, सरकारी दस्तावेजों और अन्य आवश्यक जानकारी को अनूदित करने में सक्षम है, जिससे केवल शिक्षा के क्षेत्र में ही नहीं, बल्कि सामान्य जीवन की अनुवाद संबंधी ज़रूरतों से लेकर प्रशासन, विज्ञान, विधि जैसे तमाम विशिष्ट क्षेत्रों में अनुवाद कार्य को संपन्न करने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करेगा |

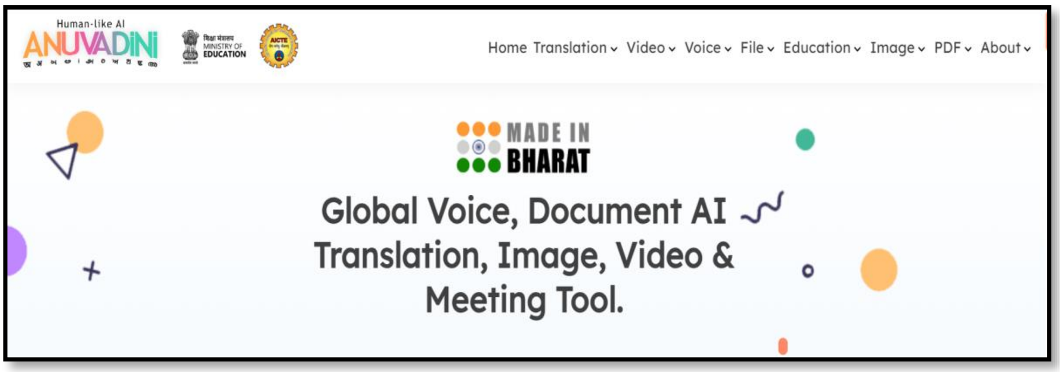

(चित्र : अनुवादिनी वेबसाइट)

‘अनुवादिनी’ की आवश्यकता

भारत में विभिन्न भाषाएँ और बोलियाँ बोली जाती हैं, जो देश की सांस्कृतिक धरोहर का एक अभिन्न हिस्सा हैं। लेकिन भाषा की इस विविधता के कारण शिक्षा और संप्रेषण में कई बार अवरोध उत्पन्न होते हैं। विशेष रूप से ग्रामीण और दूरस्थ क्षेत्रों में, जहाँ छात्रों और शिक्षकों को उनकी मातृभाषा में शिक्षा सामग्री नहीं मिल पाती है। इस समस्या के समाधान के लिए एक प्रभावी और सटीक अनुवाद मंच की आवश्यकता थी, जो विभिन्न भाषाओं के बीच संप्रेषण को आसान बना सके। अनुवादिनी मंच इसी उद्देश्य को पूरा करने के लिए विकसित किया गया है।

अनुवादिनी की विशेषताएँ

बहुभाषी समर्थन: अनुवादिनी मंच लगभग 22 भारतीय भाषाओं में अनुवाद का समर्थन करता है। इससे यह सुनिश्चित होता है कि विभिन्न भाषाई पृष्ठभूमि के लोग अपनी मातृभाषा में जानकारी प्राप्त कर सकें।

स्वचालित अनुवाद प्रणाली: अनुवादिनी मंच में एक स्वचालित अनुवाद प्रणाली है, जो कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) और मशीन अधिगम (ML) तकनीकों का उपयोग करती है। यह प्रणाली तेजी से सटीक अनुवाद प्रदान करने में सक्षम है |

उपयोगकर्ता अनुकूल इंटरफेस: अनुवादिनी मंच का इंटरफेस बहुत ही सरल और उपयोगकर्ता अनुकूल है। उपयोगकर्ता इस मंच का उपयोग बिना किसी तकनीकी ज्ञान के भी आसानी से कर सकते हैं।

अनुवादिनी उन्नत गहन शिक्षण एल्गोरिदम (algorithm) और कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) तकनीकों का उपयोग करती है जो प्रत्येक भाषा के संदर्भ और सांस्कृतिक बारीकियों पर विचार करती है और यह सुनिश्चित करती है कि अनुवाद न केवल सटीक हों बल्कि प्रासंगिक रूप से उपयुक्त भी हों।

मल्टीमीडिया अनुवाद सक्षम : अनुवादिनी में चित्र-से-पाठ और वीडियो अनुवाद सहित मल्टीमीडिया सामग्री का अनुवाद करने की क्षमता है, जो इसे विभिन्न प्रकार की सामग्री के लिए उपयुक्त बनाती है।

अनुवाद को अनुकूलित(customise) करने के लिए विशिष्ट सुविधाएं : अनुवाद को अनुकूलित करने की विशेषताएं, जैसे कि विशेष क्षेत्रों की बेहतर सेवा के लिए कुछ अनुवादों के लिए विशिष्ट शब्दावली, गणितीय समीकरण आदि जोड़ने की सुविधा शामिल है |

अनुवादिनी में उपलब्ध अनुवाद और अन्य डिजिटल संसाधन उपकरण

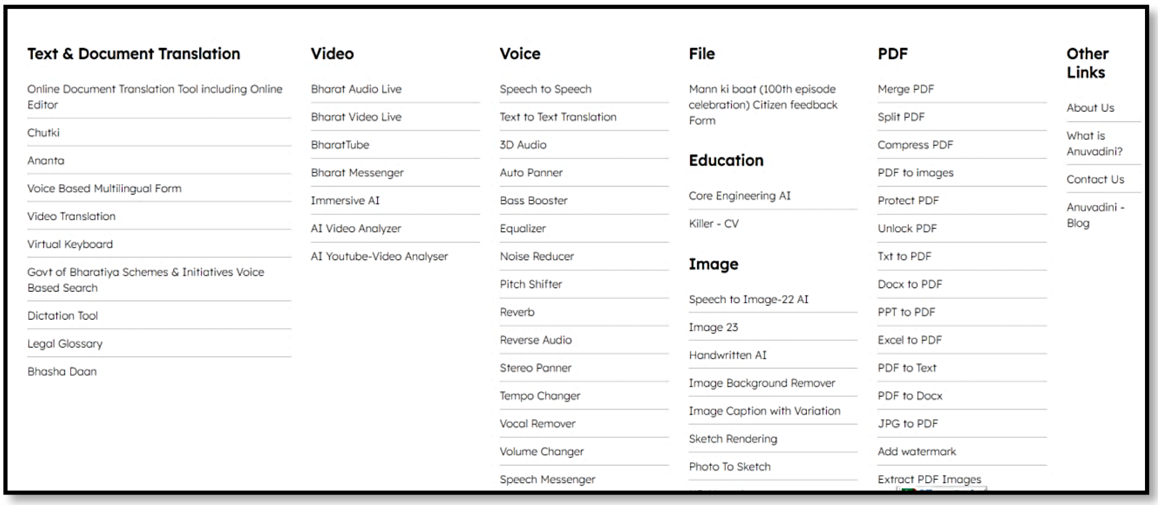

(चित्र : अनुवादिनी वेबसाइट)

- *<u>पाठ एवं दस्तावेज़ अनुवाद</u>* : ऑनलाइन संपादक सहित ऑनलाइन दस्तावेज़ अनुवाद उपकरण, चुटकी (Chutki) – रियल टाइम पाठ अनुवाद का औजार, आवाज आधारित बहुभाषी फॉर्म, वीडियो अनुवाद, वर्चुअल कुंजी पटल – जिसमें अंग्रेज़ी में टाइप करते हुए भारतीय भाषाओं में लिप्यंतरण संभव है, भारत सरकार की योजनाएं और आवाज़ आधारित खोज, श्रुतलेख उपकरण, कानूनी शब्दावली आदि

- *<u>आवाज़ आधारित औजार</u>* : वाक् से वाक् अनुवाद प्रणाली , पाठ से पाठ अनुवाद, 3-डी ऑडियो, ऑटो पैनरर्स, धमक वर्धक, तुल्यकारक, ऑडियो में शोर कम करने वाला औजार , पिच शिफ्टर, रिवर्स ऑडियो, स्टीरियो पैन, टेम्पो परिवर्तक, स्वर हटानेवाला, वॉल्यूम परिवर्तक आदि औजार

- *<u>चित्र संबंधी संसाधन</u>* :हस्तलिखित ए.आई(AI), छवि पृष्ठभूमि हटानेवाला औजार, स्केच बनाना, फोटो से स्केच में परिवर्तन, एचडी अपस्केलर आदि

- *<u>पीडीएफ</u>* : पीडीएफ का विलयन, विभाजन, आकार छोटा करना, फाइल को सुरक्षित करना, अन्य फाइल फॉर्मेट से पीडीएफ परिवर्तन आदि, वॉटरमार्क डालना, पीडीएफ से चित्र निकालना आदि के औजार

आशा है कि आने वाले वर्षों में, अनुवादिनी को और भी उन्नत और सटीक बनाने के लिए नई तकनीकों और विशेषताओं का समावेश किया जाएगा। निस्संदेह कह सकते हैं कि कृत्रिम बुद्धिमत्ता और मशीनी अधिगम सहित भाषा प्रौद्योगिकी का यह नवीनतम उत्पाद बहुमुखी विशेषताएं, नवाचार, सटीकता आदि महत्वपूर्ण पैमानों पर खरा उतरा है | अनुवादिनी मंच की इस पहल से न केवल भाषाई एकता को बल मिलेगा, बल्कि देश की समृद्ध सांस्कृतिक धरोहर को भी संजोने में मदद मिलेगी। लेकिन किसी भी डिजिटल औजार के बारे में जैसे कहा जाता है, यह मंच भी तभी जीवंत रहेगा, जब इसका व्यापक प्रयोग हो और समय समय पर जन सामान्य की प्रतिक्रिया अनुसार इसका अद्यतन हो और सुविधानुसार उपयुक्त बदलाव हो |

***

बदलते रिश्ते

एन.चित्रा

वरिष्ठ अनुवादक,मुख्यालय, दक्षिण रेलवे

रिश्ते क्या होते हैं। यह वो संबंध हैं जो हमें किसी से जोड़ती है, हमारी किसी चीज़ के प्रति लगाव, भावना या इच्छा। रिश्ते अनगिनत प्रकार के हो सकते हैं जैसे मां का अपने बच्चे का रिश्ता, बाप-बेटी का रिश्ता, भाई-बहन का रिश्ता, दादा-दादी का अपने पोता-पोती के साथ रिश्ता, मियां -बीबी का रिश्ता, मामा-भांजे का रिश्ता, दोस्ती का रिश्ता, बच्चों के अपने मां-बाप के साथ रिश्ता, दफ्तर में बास का अपने स्टाफ का रिश्ता, वगैरा वगैरा।

लेकिन आजकल देखा जाए तो ये रिश्ते काफी कमज़ोर हो चुके हैं। बल्कि ये रिश्ते अब कोई मायने नहीं रखने लगे हैं। कोई किसी से गहरा संबंध नहीं रखने लगा है।

कसमें वादे प्यार वफा सब बाते हैं, बातों का क्या ?
कोई किसी का नहीं ये झूठे नाते हैं, नातों का क्या ?

फिल्म उपकार में मन्ना डे द्वारा गाया यह गाना आज के दिन बहुत मायने रखता है । आज परिवार में या समाज में रिश्ते -नातों का कोई परवाह ही नहीं करता, ध्यान नहीं रखता है। सब अपने-अपने में मस्त रहते हैं ।

पहले तो संयुक्त परिवार हुआ करते थे। बच्चों को अपने माता-पिता से दादा- दादी, नाना-नानी, चाचा-चाची, बुआ-फूफा सभी रिश्तेदारों के बारे में जानकारी होती थी। बच्चे गर्मी की छुट्टियों में अपने रिश्तेदारों के घर जाकर बुरा-भला सब जान लेते थे। उस जमाने में घर के सदस्यों में जो प्यार, वात्सल्य, अपनापन रहता था वो तो आज के जमाने में नहीं देख पाते हैं। उस जमाने में परिवार के सदस्य अच्छे-बुरे वक्त में एक दूसरे के काम आते थे, बल्कि जाने अनजाने में एक दूसरे की मदद करने के लिए पहुंच जाया करते थे। कोई भी किसी के घर बेझिझक पहुँच जाया करते थे। लेकिन आजकल बिना सूचना दिए किसी के घर जाना पसंद नहीं करते। अब शादी ब्याह के अवसर को ही ले लीजिए। एक घर में लड़की की शादी तय होते ही पूरा परिवार एक जुट होकर तैयारियों में लगा रहता था। लेकिन आजकल तो खबर ही नहीं होती कि फलाने की शादी तय हो गई है और यदि खबर हो भी गई तो कोई भी काम में दखल अंदाज़ी करना पसंद नहीं करते हैं।

परिवार भी अब एकल हो गए हैं । एक घर में या तो एक बच्चा है या कोई बच्चे नहीं है। मां-बाप नौकरी पेशा हो चुके हैं। बच्चों के साथ वक्त बिताने के लिए उनके पास समय नहीं रह गया। एक जमाना था जब घरों में बुज़ुर्ग हुआ करते थे। यदि मां-बाप न सही दादा-दादी, नाना-नानी कोई तो बच्चों के साथ जरूर हुआ करते थे । ऐसा मौका कई बच्चों को नसीब नहीं होता है। किशोरावस्ता में या उसके बाद भी बच्चों को सयाने होने तक किसी बड़े बुज़ुर्ग की आवश्यकता होती है। यहां पर एक मां अपने बच्चों को खूब संभाल सकती है। परंतु कई माताएं आजकल बच्चों को कम उम्र से ही क्रश में छोड़ कर नौकरी करने जाती है। गर्मी की छुट्टियों में समर कैंप में डालते हैं। ऐसे में माताएं भले ही आर्थिक रूप से मजबूत होती होंगी परंतु अपने बच्चों की परवरिश ठीक से नहीं कर पाती हैं। पारिवारिक संबंधों पर ध्यान नहीं दे पाती जिससे प्यार-वात्सल्य या तो खत्म हो जाता है या न के बराबर होता है। बच्चे मां-बाप के साथ समय बिताने के लिए तरस जाते हैं। फिर निराश होकर कई बुरी आदतों में लग जाते हैं। कई जगह में हमने देखा है पति अपनी गृहणी पत्नी का आदर नहीं करता। पूरा दिन घर संभालने के बावजूद उनके रिश्तों में दरार आती है। इससे बच्चों पर बुरा असर पड़ता है ।

कई घरों में बच्चे अपने बुज़ुर्ग मां बाप के लिए वक्त नहीं निकाल पाते हैं। उन्हें वृद्धाश्रम भेज दिया जाता है। जो मां बाप रात दिन एक करके अपने बच्चों को पाल पोस कर इतने सयाने बनाकर, उनकी इच्छाओं को पूरी करते हैं उन्हीं को घर से बेघर कर दिया जाता है। कई ऐसे मां-बाप हैं जो अपने बच्चों की आवाज तक सुनने को तरस जाते हैं। ये बच्चे विदेश जाकर अपना जीवन व्यापन करते हैं तथा अपनी घर-गृहस्ती में ऐसे रम जाते हैं कि उन्हें ज़रा भी ध्यान नहीं रहता कि आज वे उनके मां बाप की वजह से ही इस जगह आ पहुंचे हैं। ऐसे में मां बाप भी अपने बच्चों के कुछ वक्त बिताने की ही मांग करते हैं न कि उनकी दौलत की ।

‘जिन्दगी ने हर किसी से कोई न कोई कीमत वसूल की है
कोई सपनों की खातिर अपनों से दूर हो गया
कोई अपनों की खातिर सपनों से दूर हो गया’

‘टूटते रिश्ते और बिखरते परिवार
जीवन के हर मोड पर
अहंकार के आगे झुकता है प्यार
गम तो हर दिल में होता है यार
पर पहले कौन झुके इस
बात की है तकरार’

आज के इस इंटरनेट युग में परिवारों में मन मुटाव होने लगा है। बच्चों का इंटरनेट से रिश्ता जुड गया है। बच्चे भी घर में क्या क्या चल रहा है कोई खबर ही नहीं रखना चाहते हैं। मां बाप के प्रति कोई कद्र नहीं रह गई है। इन्टरनेट, मीडिया, मोबाइल, टैब, लैपटॉप, डेस्कटॉप आदि-आदि के साथ लगाव इतना मजबूत हो गया है कि अब रिश्तेदारी निभाना मुश्किल हो गया है।

यूं तो हम बच्चों पर भी पूरा दोष नहीं डाल सकते। कोविड के जमाने से सभी बच्चों की स्कूल की पढ़ाई के लिए इंटरनेट एक अटूट अंग जैसा हो गया है। इंटरनेट तो फेविकोल जैसे जुड़ गया है। उनकी सांसों में भी इंटरनेट की हवा दौड़ती है। कई बच्चे तो इतने आदि हो चुके हैं कि एक मिनट भी इंटरनेट कट जाए तो उन्हें बर्दाश्त नहीं होता। उनका खाना-पीना, सोना-जागना, रोजमर्रा के कार्य करना सब इंटरनेट पर निर्भर है।

कुल मिलाकर आज कल चाहे कोई भी रिश्ता हो उसमें अपनापन, प्यार, वात्सल्य नहीं रहा। यदि कोई रिश्ता निभा भी रहा हो तो उसमें कोई स्वार्थ छुपा होता है। कई ऐसे लोग है जो पैसों से ही रिश्ता रखते हैं। जिनके पास पैसे हैं वे पैसे वालों के साथ ही वास्ता रखना चाहते हैं। पैसों से तो सब कुछ खरीद सकते हैं यहां तक कि मां बाप भी परंतु उस रिश्ते में अपनापन, प्यार वात्सल्य की भावना ही नहीं होती। ऐसे रिश्ते पैसों के लिए ही काम करते हैं तथा निभाने में बड़ी मुश्किलें आती हैं । ये शीघ्र ही टूट जाते हैं। ऐसे रिश्तों से कई लोग मानसिक रूप से अस्थिर भी होते हैं।

हम चाहें तो ये सब दूर कर सकते है। हम एक दूसरे के प्रति प्रेम भाव बनाए रख सकते है। एक साथ रहकर एक दूसरे की ज़रूरतों पर ध्यान दे सकते है। यदि कोई अनबन, गलतफहमी है तो परस्पर बातचीत से एक दूसरे की मन की बात जानकर सुलह कर सकते हैं। इससे हमारे रिश्ते अधिक मजबूत तथा बेहतरीन हो जाते हैं जिससे हमें अपार खुशी होती है। रिश्ता वही खूबसूरत होता है जिसका कोई नाम नहीं दिया जाता। रिश्तों से ही एक दूसरे के लिए जीने को जिन्दगी कहते हैं। सुख-दुख में हम किसी अपने को गले लगा सकते हैं या फिर कंधे पर सर रखकर रो सकते हैं। कहा गया है 'ना दूर रहने से रिश्ते टूटते हैं और न ही पास रहने से जुड़ते हैं। ये एहसास के पक्के धागे हैं जो याद करने से और मजबूत हो जाते हैं।'

***

क्रांति

एस.बालसुब्रमणियन
वरिष्ठ अनुवादक,मुख्यालय, दक्षिण रेलवे

मैं इस लेख द्वारा संक्षिप्त रूप में क्रांति के संबंध में कुछेक विषयों पर आपका ध्यान आकर्षित करना चाहता हूं।

आपको क्रांति का अर्थ मालूम ही होगा कि जनसमूह द्वारा शासन व्यवस्था को बदलने हेतु प्रयास या किसी कार्यपद्धति में प्रगति के फलस्वरूप हुए परिवर्तन है जैसे अंग्रेजी क्रांति (1649), अमेरिकी क्रांति (1776), फ्रांसीसी क्रांति (1789), रूसी क्रांति (1917) और चीनी क्रांति (1911&1949)। सामान्य रूप से देखें तो परिक्रमण का अर्थ भी है। वह है किसी वस्तु के चारों ओर का चक्कर जैसे मोटर में होता है । आपने सुना होगा अंग्रेजी में RPM (Revolution Per Minute) कहा जाता है।

परिवर्तन या बदलाव आदि... आदि विभिन्न परिस्थितियों में हम इस क्रांति शब्द का अर्थ ले सकते हैं। ऐसे हरेक क्षेत्र में हुई क्रांति के बारे में ही इस लेख में संक्षिप्त में जानेंगे।

आइए देखते हैं इस क्रांति के खेल से क्या परिवर्तन या बदलाव आया है ?

हरित क्रांति – Green Revolution

हरित क्रांति द्वारा विभिन्न तकनीकों, उर्वरकों, बीजों, सिंचाई सुविधाओं और कीटनाशकों जैसे कृषि उत्पादों का उपयोग करके उत्पादन में वृद्धि हुई है। हरित क्रांति ने कृषि के क्षेत्र में कुछेक परिवर्तन लाए हैं और इसके कारण किसानों ने पुरानी पद्धतियों के बदले नए आधुनिक पद्धतियों को अपनाकर खेती के क्षेत्र में वृद्धि, दोहरी फसल, जिसमें वर्ष में एक के बजाय दो फसलें बोना जैसे कई नई पहल की हैं।

नीली क्रांति - Blue Revolution

भारत में नीली क्रांति देश के जलीय कृषि के क्षेत्र से संबंधित एक क्रांति है। इस क्रांति ने मत्स्य उद्योग को एक आधुनिक उद्योग में बदलने में योगदान दिया और इससे मछुआरों की आय में भी वृद्धि हुई।

स्वर्ण क्रांति – Golden Revolution

इस क्रांति में शहद और फूलों, फलों, मसालों, सब्जियों के उत्पादन को बढ़ावा देने के लिए नए नवीन तकनीकों का उपयोग देखा गया। हरित क्रांति ने भारतीय कृषि उद्योग में बहुत सुधार किया, लेकिन स्वर्णिम क्रांति के माध्यम से ही कृषि उद्योग का बहुत विकास हुआ।

काली क्रांति – Black Revolution

काली क्रांति पेट्रोलियम में वृद्धि से जुड़ी है। भारत सरकार ने बायोडीजल बनाने के लिए पेट्रोल के साथ इथेनॉल को मिलाकर इस उत्पादन को बढ़ावा दिया और इसके फलस्वरूप पेट्रोलियम उत्पादन में उल्लेखनीय वृद्धि हुई।

ग्रे क्रांति- Grey Revolution

यह उर्वरक उद्योग से संबंधित है। यह उर्वरकों के उत्पादन में वृद्धि लाने और हरित क्रांति की कमियों को दूर करने के लिए शुरू की गई थी। इसका उद्देश्य किसानों को मदद करना और कृषि क्षेत्र का विकास करना था।

रजत क्रांति – Silver Revolution

मुर्गी पालन या अंडों के उत्पादन को बढ़ावा देने के लिए चिकित्सा और विज्ञान की मदद से इस क्षेत्र में अच्छा बदलाव आया और यह किसानों को काफी लाभदायक रहा। आंध्र प्रदेश राज्य को "एशिया की अंडा टोकरी" (Egg basket of Asia) और तमिलनाडु में नामक्कल को 'अंडे का शहर' (Egg City) कहा जाता है। इसमें स क्रांति की अह्म भूमिका रही है।

श्वेत क्रांति- White Revolution

श्वेत क्रांति दूध और डेयरी उत्पादों के उत्पादनों से संबंधित है। डेयरी के क्षेत्र की समस्या को हल करने के लिए, दुग्ध उत्पादकों में बुनियादी ढांचे के आधुनिकीकरण को बढ़ाना जैसे कई उद्देश्यों से यह क्रांति सामने आई।

क्रांति शब्द सुनते या कहीं पढ़ते समय एक नकारात्मक चिंतन उत्पन्न होता है। मगर वास्तव में क्रांति के कारण होनेवाले परिवर्तन या बदलाव से मानव समुदाय या देश का विकास हुआ है जो एक सकारात्मक प्रभाव है।

किसी भी क्षेत्र में नए विचार या नई प्रक्रियाओं को अपनाना भी क्रांति ही है। मानव मन की आदत है कि किसी भी परिवर्तन को ऐसे ही हम नहीं स्वीकारते। उसे अपनाने हेतु किसी बाहरी बल की आवश्यकता रहती है। क्रांति भी एक ऐसा ही साधन है। तमिल में कहा जाता है –

'மாற்றம் ஒன்றுதான் மாறாதது'

इन क्रांतियों यह पता चलता है कि भारत सरकार विकास केलिए प्रतिबद्ध है। आशा है और विश्वास है कि हमारे देश के विकास के लिए भविष्य में इस प्रकार के कई क्रांतियाँ आएंगी और देश, प्रगति की राह पर चलेगी। जय हिंद।

****

तमिलनाडु राज्य के पुराने वाद्य यंत्र

वैदेही नरेश कुमार
वरि.अनुवादक, प्रधान कार्यालय, द.रेलवे

तमिलनाडु राज्य अपने शानदार, विशालतम तथा अतिसुन्दर मंदिरों के लिए प्रसिद्ध है। मंदिरों के साथ साथ नृत्य एवं संगीत के लिए भी प्रसिद्ध है। भरतनाट्यम एवं कर्नाटक संगीत कई सदियों से मंदिरों के साथ जुड़ा हुआ है और नृत्य एवं संगीत का पोषण तथा प्रगति मंदिरों में हुई है। जहाँ नृत्य और संगीत है वहाँ जरूर वाद्य यंत्रों का होना आवश्यक है। आज की तारीख में हम संगीत से जुड़े कुछ मशहूर वाद्य यंत्र फटाफट गिन लेते हैं जैसे वीणा, वायलिन, विचित्र वीणा, बांसुरी, मेंडोलिन, मृदंग आदि। ये वाद्य यंत्र कलाकारों द्वारा स्वतंत्र रूप से या गायकों के साथ जुड़कर बजाते हुए मशहूर हुए हैं। उदाहरण के लिए वीणा वादन स्वतंत्र रूप से होता है लेकिन वीणा के साथ देते हैं, घटम और मृदंग वाद्यों के कलाकार। वायलिन भी स्वतंत्र रूप से वीणा की तरह बजाया जाता है। लेकिन गायकों के साथ वायलिन भी बजाया जाता है। शादियों में , मंदिरों के उत्सवों में नादस्वरम वाद्य यंत्र अत्यंत मशहूर है। इस प्रकार से वाद्य यंत्रों का महत्व तमिलनाडु राज्य के संगीत में अत्यधिक है।

1. **वीणा** – वीणा कलाओं की देवी सरस्वती माता का प्रिय वाद्य यंत्र है। यह तारों से बना यंत्र है। वीणा तमिलनाडु के अत्यंत पुराने एवं लोकप्रिय वाद्य है। वीणा में आमतौर पर लंबी गर्दन, खोखला शरीर और कई तार होते हैं। तारों को उंगलियों से बजाया जाता है, जिससे मधुर और गूंजती हुई ध्वनि निकलती है। वीणा सिर्फ़ एक वाद्य यंत्र नहीं है; यह भारतीय संस्कृति और विरासत का प्रतीक है। संगीत के ज़रिए भावनाओं को जगाने और कहानियाँ सुनाने की इसकी क्षमता ने पीढ़ियों से श्रोताओं को आकर्षित किया है। वीणा के कई प्रकार हैं – रुद्र वीणा, विचित्र वीणा, सरस्वती वीणा आदि। आप इस वीणा वादन को इस लिंक में क्लिक करके सुन सकते हैं **वीडियो देखें**

2. **तविल एवं नादस्वरम् -** तविल एक सर्वोत्कृष्ट ताल वाद्य है जो सदियों से तमिलनाडु की समृद्ध संगीत विरासत का अभिन्न अंग रहा है। इसकी गहरी, गूंजती ध्वनि शास्त्रीय कर्नाटक संगीत से लेकर जीवंत लोक प्रदर्शनों तक कई संगीत रूपों के लिए लयबद्ध आधार प्रदान करती है। तविल का विशिष्ट बैरल आकार इसकी शक्तिशाली और समृद्ध ध्वनि में योगदान देता है। पारंपरिक रूप से कटहल की लकड़ी से इसे तैयार किया जाता है। सुना जाता है कि इस प्रकार की लकड़ी वाद्य के ध्वनिक गुणों को बढ़ाती है। हाथों से बजाए जाने वाले तविल को जटिल लय बनाने के लिए असाधारण कौशल और सटीकता की आवश्यकता होती है। अक्सर नादस्वरम, एक वायु वाद्य के साथ जुड़कर तविल एक आकर्षक संगीत समूह बनाता है।
   नादस्वरम - नादस्वरम एक शक्तिशाली, तीखी ध्वनि वाला डबल-रीड वायु वाद्य यंत्र है, जिसे अक्सर दुनिया के सबसे तेज़ गैर-पीतल ध्वनिक वाद्य यंत्र के रूप में जाना जाता है। यह एक बड़ी, भड़कीली घंटी के साथ दृढ़ लकड़ी से तैयार किया जाता है, और इसकी ध्वनि राजसी और जीवंत दोनों है। इस की रूप की तुलना उत्तर भारत की शहनाई से की जा सकती है लेकिन

दोनों की ध्वनियाँ अलग-अलग हैं ।

तविल और नादस्वरम का वादन तमिलनाडु की सांस्कृतिक गतिविधियों में अभिन्न अंग है । इन वाद्य यंत्रों के वादन को मंदिरों के समारोहों में, शादियों में तथा लोकगीत एवं नृत्यों में जरूर शामिल किया जाता है।

तविल एवं नादस्वरम् वादन इस विडीयो में सुनें एवं देखें **वीडियो देखें**

3. **घटम-** घटम भारत का एक अनोखा और प्राचीन वाद्य यंत्र है। यह मूल रूप से एक मिट्टी का घड़ा है, लेकिन इस घड़े को कई तरह की ध्वनियाँ उत्पन्न करने के लिए सावधानीपूर्वक तैयार किया जाता है। घटम मुख्य रूप से मिट्टी से बनाए जाने पर भी, अक्सर बेहतर ध्वनि गुणवत्ता के लिए पीतल या तांबे जैसी धातुओं को भी मिलाया जाता है। घड़े की मोटाई, उसका आकार और विशिष्ट मिट्टी का मिश्रण आदि वाद्य की पिच और स्वर में योगदान करते हैं। झिल्ली पर निर्भर रहने वाले कई ताल वाद्यों के विपरीत, घटम का पूरा शरीर ध्वनि उत्पन्न करने के लिए कंपन करता है। वादक अपनी उँगलियों से बजाते हैं और बर्तन के विभिन्न भागों पर प्रहार करने के लिए अपनी उंगलियों और हथेलियों का उपयोग करते हैं, जिससे विभिन्न प्रकार के स्वर और लय उत्पन्न होते हैं। घटम कर्नाटक शास्त्रीय संगीत का एक मुख्य हिस्सा है, जो कई रचनाओं के लिए लयबद्ध आधार प्रदान करता है। आइए पद्मश्री पुरस्कार प्राप्त श्री विक्कु विनायक राम का वादन देखें .**वीडियो देखें**

इस वीडियो में घटम के साथ अन्य सभी वाद्य यंत्रों का वादन देख सकते हैं **वीडियो देखें**

4. **तारै तप्पट्टै -** थारै थप्पट्टै एक एकल वाद्य नहीं है, बल्कि दो पारंपरिक दक्षिण भारतीय वाद्यों का संयोजन है जिन्हें अक्सर एक साथ बजाया जाता है या अलग-अलग भी बजाया जाता है ।
तारै बांसुरी जैसी आकार में वायु आधारित वाद्य यंत्र और लकड़ी या धातु से बना हुआ रहता है । विभिन्न लंबाई और आकार में होते हैं। ऊँची, मधुर ध्वनि उत्पन्न करता है।

तप्पटै को परै या तप्पू के नाम से भी जाना जाता है । यह तमिलनाडु राज्य का एक पारंपरिक ताल वाद्य है जिसका उपयोग घोषणा करने के लिए किया जाता है और इसे त्यौहारों, लोक नृत्यों, शादियों और समारोहों के साथ-साथ शव यात्रा के दौरान भी बजाया जाता है । यह वाद्य मुख्य रूप से तमिलनाडु और श्रीलंका जैसे महत्वपूर्ण तमिल प्रवासी क्षेत्रों में तमिल लोगों द्वारा बजाया जाता है। इस वाद्य के कई प्रकार हैं, लेकिन आम तौर पर इसमें लकड़ी से बना एक ड्रम होता है, जो एक तरफ खुला होता है और दूसरी तरफ एक फैला हुआ जानवर का चमड़ा होता है और ड्रम को पीटने के लिए लकड़ी की दो छड़ियों का उपयोग किया जाता है।

इस वाद्य का उल्लेख संगम साहित्य में मिलता है और इसका उपयोग प्राचीन तमिल लोगों द्वारा

किया जाता रहा है। इसका उपयोग **परैयाट्टम** या **तप्पाटम** जैसे नृत्य रूपों के एक भाग के रूप में किया जाता है। इसे लोक नृत्यों और उत्सवों में लकड़ी के वाद्य यंत्र तारै के साथ या अनुष्ठानों और समारोहों में अन्य पारंपरिक वाद्ययंत्रों के साथ बजाया जा सकता है।
आइए वीडियो देखें

5. उडुक्कै - यह घंटा-घड़ी के आकार का ढोल तमिल लोक संगीत का एक मुख्य हिस्सा है। इसकी जीवंत, समन्वित लय लोक प्रदर्शनों की रीढ़ बनती है। इसकी तुलना उत्तर भारत की डमरू से की जा सकती है। लेकिन यह डमरू से आकार में बड़ा है और इसे उंगलियों से बजाया जाता है। मारियम्मन, मुरुगन एवं शिव मंदिरों में इसका वादन प्रसिद्ध है। आइए वीडियो देखें

6. **मोरसिंग** - इस यंत्र में घोड़े की नाल के आकार की एक धातु की अंगूठी होती है जिसमें दो समानांतर कांटे होते हैं जो फ्रेम बनाते हैं, और बीच में कांटों के बीच एक धातु की जीभ होती है, जो एक छोर पर अंगूठी से जुड़ी होती है और दूसरे छोर पर कंपन करने के लिए स्वतंत्र होती है। धातु की जीभ, जिसे ट्रिगर भी कहा जाता है, गोलाकार रिंग के लंबवत तल में मुक्त छोर पर मुड़ी होती है ताकि इसे बाजाते हुए कंपन उत्पन्न किया जा सके। मोर्सिंग को सामने के दांतों पर रखा जाता है, होठों को थोड़ा ऊपर उठाया जाता है और हाथ में मजबूती से पकड़ा जाता है। ध्वनि उत्पन्न करने के लिए इसे दूसरे हाथ की तर्जनी का उपयोग करके बजाया जाता है। नासिका ध्वनि बनाते समय वादक की जीभ का उपयोग स्वर बदलने के लिए किया जाता है। आइए वीडियो देखें

7. **कंजीरा** - कंजीरा की ध्वनि गूंजती हुई ढोल की आवाज़ और झनकार की झनकार का मिश्रण है। कुशल वादक प्रहार तकनीक और हाथ की हरकतों में बदलाव करके कई तरह की ध्वनियाँ और लय उत्पन्न कर सकते हैं। इस प्रकार की बहुमुखी प्रतिभा के कारण कंजीरा एक आकर्षक वाद्य बनती है। आइए वीडियो देखें

8. **मुरसु (तमिल: *முரசு*)** - एक प्रकार का ड्रम है जिसकी उत्पत्ति कई शताब्दियों पहले भारत के तमिलनाडु में हुई थी। मुरसु के तीन प्रकार हैं। वीर मुरसु (मार्शल ड्रम)- इसे सैन्य उद्देश्यों के लिए इस्तेमाल किया जाता है। यदि युद्ध संबंधी घोषणाएं करनी है तो इसका उपयोग किया जाता है। यह बड़ा होता है और इसे मंच पर रखा जाता है। त्याग मुरसु (दान ड्रम) राजा द्वारा उपहार देते समय घोषणाओं के लिए इस्तेमाल किया जाने वाला ड्रम है। गरीब लोगों को

सामान प्राप्त करने के लिए आमंत्रित करने हेतु भी इस्तेमाल किया जाता है। न्याय मुरसु (निर्णय ड्रम)- एक ड्रम जिसका उपयोग लोगों को न्यायिक कार्यवाही के लिए बुलाने या निर्णय की आवश्यकता वाली अपनी शिकायतें प्रस्तुत करने के लिए किया जाता है। यह वाद्य यंत्र न होने पर भी वाद्य यंत्र वाले गुण रखता है और सदियों से दक्षिण भारत में इसका उपयोग है।

9. कोम्बू - कोम्बू तमिलनाडु और केरल में एक वायु वाद्य यंत्र है।आमतौर पर पंचवाद्यम, पंडी मेलम, पंचारी मेलम आदि के साथ इसे बजाया जाता है। यह संगीत वाद्य आमतौर पर दक्षिण भारत में देखा जाता है। यह वाद्य एक लंबे सींग (तमिल और मलयालम में कोम्बू) जैसा होता है। प्राचीन काल में कोम्बू को मुरसु के साथ युद्ध के दौरान बजाया जाता था। आइए **वीडियो देखें**

10. **उरुमी -** उरुमी वाद्य यंत्र तमिलनाडु राज्य का वाद्य यंत्र है जिसमें एक दो सिर वाला घंटाकार ड्रम होता है। दोनों तरफ़ से खोखले ड्रम को अक्सर जटिल नक्काशी का उपयोग करके एक ही लकड़ी से तैयार किया जाता है । इसके लिए पसंदीदा लकड़ी जैकवुड है, लेकिन रोसवुड या किसी अन्य लकड़ी का उपयोग भी किया जाता है। बाएं और दाएं दोनों सिर आमतौर पर गाय की खाल से बने होते हैं जिसे एक पतली धातु की अंगूठी के चारों ओर फैलाया जाता है । एक पतली लकड़ी का उपयोग करके इसे बजाया जाता है । आइए **वीडियो देखें**

11. मृदंग - मृदंग आम तौर पर कटहल की लकड़ी से बनाया जाता है। इसका एक अनूठा आकार इसकी समृद्ध ध्वनि में योगदान देता है। दोनों तरफ़ सिरे जानवरों की खाल (अक्सर बकरी या भैंस) से ढके होते हैं और अलग-अलग पिच पर ट्यून किए जाते हैं। बायाँ सिरा बास नोट्स बनाता है, जबकि दायाँ उच्च-पिच वाली ध्वनियाँ बनाता है। मृदंग वादक अपने हाथों और उंगलियों का उपयोग करके लयबद्ध पैटर्न और बारीकियों की एक विस्तृत श्रृंखला बनाते हैं। मृदंग का उपयोग वायलीन, वीणा, गायन आदि के साथ सहायक वाद्य के रूप में किया जाता है। लेकिन संगीत बजाते समय, मृदंगम वादक को अपनी प्रतिभा दिखाने का अवसर भी दिया जाता है। आइए वीडियो देखें

12. **याऴ:** हालांकि यह एक प्राचीन वाद्य यंत्र है, लेकिन इसे अभी भी तमिल संगीत विरासत का प्रतीक माना जाता है। यह एक अनूठा आकार वाला एक तार वाला वाद्य यंत्र है। यह वाद्य यंत्र पश्चिम देशों के वाद्य यंत्र हार्प से कुछ मिलता जुलता है। इस वाद्य यंत्र का वादन लुप्त होने के खगार पर है।

13. **पंबै** – पंबै एक प्रकार की बाँसुरी है।

14. अयमुगपरै , सीवाळी, तालम्, मुळऊ आदि अन्य कुछ वाद्य यंत्र हैं जिन्हें तमिलनाडु राज्य के लोकगीतों में अत्यधिक उपयोग किया जाता है। अयमुगपरै वादन देखते हैं – वीडियो देखें

ये तमिलनाडु राज्य के कुछ वाद्ययंत्र हैं जो आज भी प्रसिद्ध है। लेकिन बहुत सारे वाद्ययंत्र लुप्त हो चुके हैं। आज हमारे समाज का कर्त्तव्य है कि जो भी अब बच पाया है उस संस्कृति की रक्षा करें तथा आगे बढ़ाएं। जय हिन्द।

***